द्विमासिक
वर्ष : ४
अंक : १९
जुलाई–अगस्त १९९३

ऋषि प्रसाद

पूज्यपाद संत श्री आसारामजी महाराज

गुरु सेवत ते नर धन्य यहाँ ।
तिनको नहीं दुःख यहाँ न वहाँ ॥

ऋषि प्रसाद

वर्ष : ४
अंक : १९
जुलाई–अगस्त १९९३.

शुल्क वार्षिक : रू. २५/–
आजीवन : रू. २५०/–
परदेश में वार्षिक : US$ १५(डॉलर)
आजीवन : US$ २०० (डॉलर)

कार्यालय
'ऋषि प्रसाद'
श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद–३८० ००५.
फोन : 486310, 486702

परदेश में शुल्क भरने का पता
International Vedanta Seva Samiti,
8 Williams Crest,
Park Ridge N. j. 07656 U.S.A.
Phone : (201) - 930 - 9195

टाईप सेटींग : ज्ञानगंगा
प्रकाशक और मुद्रक : श्री के. आर. पटेल
श्री योग वेदान्त सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा, साबरमती,
अहमदाबाद–३८० ००५ ने
अंकुर ऑफसेट, गोमतीपुर, अहमदाबाद में
छपाकर प्रकाशित किया ।

अनुक्रम

'ऋषि प्रसाद' हर दो महीने में ९ वीं तारीख को प्रकाशित होता है ।

❀ सदस्यों को खास सूचना ❀

कार्यालय के साथ किसी भी प्रकार का पत्रव्यवहार करते समय अपना स्थायी सदस्य क्रमांक अवश्य बतायें ।

'ऋषि प्रसाद' चौथे वर्ष में प्रवेश कर रहा है । तीन वर्ष में सदस्यों की संख्या कल्पनातीत बढ़ी । नब्बे हजार सदस्य सहज में बन जाना यह सदस्य बनानेवाले साधकों की सेवा, उत्साह, वाचकों की गुणग्राहिता और पूज्यश्री की आत्मा-परमात्मा को छूकर आनेवाली लोक-कल्याणकारी, शान्ति और सान्त्वना देनेवाली, आनन्द से सराबोर करनेवाली अमृतवाणी की महिमा की परिचायक है ।

पूज्यश्री की अमृतवर्षा हर दिल की उलझनें मिटानेवाली है । हर जाति की, हर सम्प्रदाय की, हर उम्र की व्यक्ति को लगता है कि पूज्यश्री मेरे लिए ही बोल रहे हैं । सब सद्‌भागी श्रोता महसूस करते हैं कि स्वामीजी हमारे और केवल हमारे ही हैं ।

यह कैसा अद्‌भुत आत्मिक चुम्बकत्व है ! इसका प्रत्यक्ष प्रभाव देखने को मिला जब पंचेड़ आश्रम में पूज्यश्री के जन्म-महोत्सव पर रतलाम का बोहरा समाज बेन्ड़बाजे लेकर पू. बापू को बधाइयाँ देने उमड़ पड़ा । सब पार्टियों के नेता लोग, सब जाति, एवं पंथ के लोग, दूर दूर के साधक लोग पूज्यश्री के पावन सान्निध्य में ईश्वरीय अमृतपान करने हेतु इकट्‌ठे हो गये थे ।

सहजभाव से निरन्तर आत्मानन्द में निमग्न रहनेवाले सद्‌गुरुदेव की अनुभववाणी रूप प्रसाद को दूर दूर तक घर घर में पहुँचानेवाली 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका जनता में बहुत बहुत आदर पा रही है ।

आजकल की डाक व्यवस्था या अन्य कोई गलतियों के कारण कभी कभी सदस्यों को पत्रिका देर से पहुँचती है या किसी कारण से कदाचित नहीं पहुँच पाती तो पत्रिका का वियोग उन्हें असह्य प्रतीत होता है, ऐसा उनके पवित्र पत्रों से हमें ज्ञात हुआ ।

हम उन सभी साधकों-सदस्यों से करबद्ध होकर क्षमायाचना करते हैं । डाक या डाकिये की असावधानी से या और किसी भी असावधानी से यह पावन पत्रिका आपको देर से पहुँची हो या न पहुँचने पर हमारे द्वारा दुबारा भेजने पर देर से मिली हो... तो इन सारी क्षतियों को उदार हृदय से आप क्षमा कीजिए और हमें सद्‌गुरु एवं साधकों के बीच दैवी सेतु रूप सन्देश... 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका पहुँचाने की सुन्दर सेवा के बारे में आपके सुन्दर सुझाव हमें भेजें.... आपके सुझाव हमें सादर आवकार्य हैं ।

पंचेड़ आश्रम की पहाड़ी... चारों ओर सब सूखा ही सूखा । अन्य कुँओं और टयुबवेलों में पानी नहीं जबकि डेढ़ दो सौ फीट ऊँची पंचेड़ आश्रम की इस पहाड़ी पर साढ़े सात हॉर्स पावर की मोटर चलती है और टयूबवेल में पानी खूटता नहीं है । दो चार बीघे की यह पहाड़ी इतना पानी गोद में लिये कैसे बैठी है ! सरकार और विज्ञान इस ईश्वरीय कृपा का दर्शन करने आ सकते हैं । नास्तिक लोग इस आश्चर्यजनक संत-प्रसाद और ईश्वर-लीला को अपनी आँखों से प्रत्यक्ष देख सकते हैं, जो आज भी मौजूद है ।

संत तुलसीदासजी का वचन है :

जहाँ सुमति वहाँ संपत्ति नाना ।
जहाँ कुमति वहाँ दुःख निधाना ।।

इस संत-वचन का प्रत्यक्ष प्रमाण पंचेड़ आश्रम की पहाड़ी पर नहीं मिल रहा है क्या ?

पंचेड़ आश्रम का कुँआ भी अविरत गंगा बहा रहा है । आसपास के कुँए कंगालियत की खबरें दे रहे हैं जबकि आश्रम का कुँआ सदा भरपूर....

अहमदाबाद एवं सुरत में कौमी हिंसा, खूनामरकी, मार-काट और आग की क्रूर घटनाएँ घटीं । सुरत एवं अहमदाबाद शहर में मंत्रदीक्षा लिए हुए लाखों साधक रहते हैं । इनमें से किसी भी साधक को इन कौमी दंगों में जानमाल की किंचित् भी हानि नहीं हुई । आसपास की दुकानों में आग और बीच में साधक की दुकान बिल्कुल सुरक्षित । क्या आश्चर्य है ! आग लगानेवाले क्रूरों ने आसपास की दुकानों में आग लगाई लेकिन वह

क्रूर टोला साधक की दुकान से अनजाना-सा होकर आगे निकल गया। कौन होगा उन क्रूरों को साधक की दुकान से दूर जाने के लिए प्रेरित करनेवाला ? वही परमेश्वर... अंतरात्मा जिसका साधक लोग ध्यान-भजन-जप करते हैं।

भोपाल का 'गैसकाण्ड' देखो ! उस अभागी फैक्ट्री से एकाध कि. मी. की दूरी पर दो सोसायटियाँ हैं जिनमें स्वामी परमानन्द भण्डार के और पूज्य श्री आसारामजी बापू के शिष्य निवास करते हैं। हवाओं ने रूख बदला और 'गैसकाण्ड' का प्रभाव इन निकटवर्ती सोसायटियों पर बिल्कुल नहीं पड़ा जबकि दूर दूर की आबादी तबाह हो गई।

ईश्वर की लीला देखकर, उस प्यारे की प्रकट कृपा देखकर दिल कई बार गद् गद् हो जाता है। इस आश्रम के दैवी कार्यों में ईश्वर के हाथ का, ईश्वर की करुणा-कृपा का ही हम कदम कदम पर दर्शन कर रहे हैं।

– श्री योग वेदान्त सेवा समिति

आपका परम कर्त्तव्य

– स्वामी रामतीर्थ

इस संसार में आपका परम पावन कर्त्तव्य जो आप पर ईश्वर ने डाला हुआ है, वह है अपने आपको प्रसन्न रखना। यह मत समझो कि आपका कर्त्तव्य खान-पान की चीजें जुटाना है अथवा किसीका प्रेम प्राप्त करना, किसीको प्रसन्न करना या कोई न कोई सांसारिक उद्देश्य प्राप्त करना है। इन सब उद्देश्यों और आदर्शों को परे फेंको। हानि-लाभ की परवाह मत करो। आसपास की परिस्थितियों से स्वतंत्र हो जाओ। अपने आपको नित्य शांत और प्रसन्न रखना ही अपना उद्देश्य बना लो।

आपका सामाजिक धर्म और घर के सम्बन्ध में भी आपका बड़ा उत्तरदायित्व आप पर केवल इतना है कि आप प्रसन्न रहो। आप अपने प्रति सच्चे रहो और इसके सिवा अन्य किसी वस्तु की परवाह न करो। उदास और खिन्नचित्त होना ही धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक और पारिवारिक अपराध है। केवल यही एक पाप है जो अन्य सब अपराधों, अधःपतनों और पापों की जड़ है।

निर्मल गंभीरता और राग-द्वेष रहित शांति में डूब जाओ। फिर आप देखेंगे कि आपके कामकाज और आसपास चारों ओर की परिस्थिति स्वतः आपके अनुकूल होने के लिये बाध्य हो जायेगी।

आप अपने सिवा और किसीके प्रति उत्तरदायी नहीं हैं। आप यदि आनंद और शांति के इस परम पावन नियम को तोड़ते हैं तो आप स्वयं अपने प्रति घृणित अपराधी बन जाते हैं।

दूसरे लोग भले ही प्रातः उठते ही यह सोचते हों कि उनको बहुत से काम, बहुत से कर्त्तव्य हैं पर जब आप प्रातःकाल उठो तो सदा अपने आपको परम आनंदमय अनुभव करो। बस, आपका एकमात्र यही कर्त्तव्य है। इसका अर्थ यह नहीं कि आप और कामों को छोड़ बैठो या घर के कामों से विमुख हो जाओ। नहीं.... आप इन कामों को गौण, खेल जैसा समझ सकते हैं। कोई भी काम करते समय आप यह सदा स्मरण में रखो कि यह ठोस कहलानेवाले मुख्य काम वास्तव में नितान्त खोखले और गौण बहानेमात्र हैं। वास्तव में आपका परम आवश्यक कर्त्तव्य है अपने आपको सन्तुष्ट रखना।

काम करते समय बीच-बीच में एक आध पल के खाली समय में इस बात का ध्यान करो कि, 'केवल एक ही तत्त्व परमेश्वर है, वही मेरा अपना आपा है। मैं मात्र साक्षी हूँ। मुझे कर्म के परिणाम, अर्थ और फल से कुछ भी प्रयोजन नहीं।' इस प्रकार विचार करते हुए अपनी आँखें बन्द कर लो। अपने अंगों को ढीला छोड़ दो, शरीर को पूर्ण विश्राम में रहने दो। विचारों के भार को अपने ऊपर से उतार डालो, अपने कन्धों पर से चिन्ता का भार उतारने में आप जितना ही अधिक सफल होगे, उतना ही अधिक आप अपने आपको बलवान अनुभव करोगे।

(अरण्य संवाद)

परमहंसों का ॐ प्रसाद

हम हमारे अहं को जैसा बनायें उस प्रकार का काम करने का हमारा कर्त्तव्य बन जाता है। अपने को बाप मानो तो बेटों का पालन करना तुम्हारा कर्त्तव्य बन जाता है। अपने को ट्राफिक पुलिस मानो तो ट्राफिक (यातायात) नियंत्रण करना तुम्हारा कर्त्तव्य बन जाता है। अपने को फौजी मानो तो सरहद पर जाना तुम्हारा कर्त्तव्य बन जाता है। अपने को दर्दी मानो तो अस्पताल जाना तुम्हारा कर्त्तव्य है। अपने को दुकानदार मानो तो दुकान चलाना तुम्हारा कर्त्तव्य है। कर्त्ता अपने में जैसा अहं आरोपित करता है वैसा उसका कर्त्तव्य हो जाता है।

कर्त्ता यदि अपने अहं को विवेक की नजर से देखे तो यह अहं 'अहं ब्रह्मास्मि' के रूप में व्यापक देखने को मिलेगा। इसमें कोई कर्त्तव्य नहीं रहता। कोई विधि नहीं, कोई निषेध नहीं, कोई बंधन नहीं, कोई मुसीबत नहीं, कोई 'टेन्शन' (तनाव) नहीं।

कर्त्ता यदि अपने अहं को विवेक की नजर से देखे तो यह अहं 'अहं ब्रह्मास्मि' के रूप में व्यापक देखने को मिलेगा। इसमें कोई कर्त्तव्य नहीं रहता। कोई विधि नहीं, कोई निषेध नहीं, कोई बंधन नहीं, कोई मुसीबत नहीं, कोई 'टेन्शन' (तनाव) नहीं।

कर्त्ता अपने असली स्वरूप में जागता नहीं है। इससे उसकी मान्यताएँ, इच्छाएँ और रुचियाँ अनेक प्रकार की होकर आसक्ति और कर्म के पाश, कर्म के बंधन उत्पन्न करती हैं। आसक्ति और कर्म के पाश में वही कर्त्ता गेंद की तरह चौरासी लाख जन्मों में घूमता रहता है। एक जन्म से दूसरे जन्म में गेंद की तरह उछलता रहता है।

वही कर्त्ता यदि अपनी बुद्धि का सदुपयोग करके अपनी वास्तविकता को पहचान ले, अपने वास्तविक अहं को पहचान ले तो वह परब्रह्म परमात्मा है। कर्त्ता अपने वास्तविक अहं को भूलकर अपने स्फुरण में अहंबुद्धि करता है और अपने को नात-जातवाला मानता है। देह और अंतःकरण के साथ जुड़ता है। फिर यह कर्त्ता मानता है कि अमुक व्यक्ति मिले तो सुख मिले, अमुक पदार्थ खाऊँ तो सुख मिले, अमुक जगह जाऊँ तो सुख मिले, किसीके साथ बात करूँ तो सुखी होऊँ.... यह सब क्या है ? कर्त्ता ने अपनी परिच्छिन्नता स्वीकार कर ली और सब मुसीबतें उठा ली। अनेक प्रकार के बंधन की बेड़ियाँ खुद ही पहन ली।

जब तक कर्त्ता अपने असली स्वरूप को न जाने तब तक जिन कार्यों को करने से श्रेष्ठ पुरुष राजी हों, ज्ञानवान पुरुष प्रसन्न हों और अपने हृदय में संतोष आये ऐसा कार्य करना चाहिए। यह पुण्यकर्म है और यही अपने को कर्त्तापन से मुक्त करने का मार्ग है।

कर्त्ता अपने को त्यागी मानेगा तो कहेगा कि त्याग करूँ, अपने को भोगी मानेगा तो कहेगा कि भोग भोगूँ। कर्त्ता यदि अपने को ब्रह्म माने तो न त्याग करना है न भोग भोगना है, न तो यात्रा करना है न ही गुफा में बैठना

है । उसके सब कर्म सहज स्वभाव बन जाते हैं ।

संसारियों की नजर में, साधुओं की नजर में, दूसरे किसीकी भी नजर में ज्ञानी के कर्म, बुद्ध पुरुष के कर्म प्रशंसनीय हों या निंदनीय हों पर ज्ञानी कर्त्तापने से परे हो चुके हैं । उनको कर्म का पाश नहीं बाँधता । ऐसे महापुरुष की तुलना किसके साथ हो सके ?

तस्य तुलना केन जायते ?

श्री वशिष्ठजी महाराज कहते हैं कि जीव को प्रयत्नपूर्वक अपने कर्त्ताभाव को पिघला देना चाहिए । एक बड़ी लकड़ी पड़ी है । उसे देखकर बढ़ई कल्पना करता है कि इसमें से इतनी टेबल बनेगी, इतनी कुर्सियाँ बनेगी, इतने पट्टे बनेंगे । लकड़ी तो वैसी की वैसी पड़ी है किन्तु बढ़ई की कल्पना में यह सारा फर्नीचर है । उसी प्रकार परब्रह्म परमात्मा वैसे के वैसे हैं । मनरूपी बढ़ई उसमें कल्पना करता है और अच्छा, बुरा, कर्त्तापन, भोक्तापन बनाकर परेशान होता है ।

... तो कर्त्ता को क्या करना चाहिए ?

जब तक कर्त्ता अपने असली स्वरूप को न जाने तब तक जिन कार्यों को करने से श्रेष्ठ पुरुष राजी हों, ज्ञानवान पुरुष प्रसन्न हों और अपने हृदय में संतोष आये ऐसा कार्य करना चाहिए । यह पुण्यकर्म है और यही अपने को कर्त्तापन से मुक्त करने का मार्ग है । जिस कार्य को करने से तुम्हारे हृदय में शांति हो, आनंद का अनुभव हो, संतोष हो और ज्ञानी महापुरुष राजी हों ऐसे कार्य करना चाहिए । ऐसा नहीं कि स्वार्थी लोग तुम्हारी प्रशंसा करें, 'वाह भाई वाह' करें, ऐसे कार्य में लग जाओ । नहीं, आत्म-साक्षात्कारी महापुरुष जिस कार्य की प्रशंसा करें वह कार्य करने से तुम्हारी योग्यता बढ़ेगी । अपने कर्त्तापन को बिखेरने की योग्यता बढ़ेगी । बीज की योग्यता बढ़े माने क्या ? बीज का बीजपना मिटे तो वह वृक्ष बने । यह है बीज की योग्यता । कर्त्तापन जितना मिटा उतनी अपनी योग्यता बढ़ी, कर्त्तापन जितना पक्का हुआ उतनी योग्यता घटी ।

कोई व्यक्ति समाज में कार्य करे, सेवा करे और अपने को समाजसेवक माने, सभा में उसकी प्रशंसा हो कि यह भाई अमुक तहसील के, जिले के या राज्य के अच्छे सेवक हैं तो वह अपने कर्त्तापन को अमुक विस्तार में, अमुक सीमा में बाँधता है । ऐसा कार्यकर्त्ता जब सत्संग का बराबर अवलंबन लेता है तब जानता है कि हम कार्य के कर्त्ता नहीं, कार्य प्रकृति में हो रहा है । कर्त्ता, भर्त्ता, भोक्ता यह सब महेश्वर की सत्ता से मात्र दिख रहा है । बाकी है सब खेल, है सब स्वप्न । ऐसा बोध होने लगेगा और अपना आत्मस्वरूप ब्रह्माण्ड में व्यापक रूप से देखने को मिलेगा ।

कर्म के बारे में दूसरा कुछ भी न समझ में आये तो इतना तो जान लो कि जो कार्य करने से तुम्हारा हृदय प्रसन्न हो, संतुष्ट हो और श्रेष्ठ पुरुष राजी हों, वे पुण्यकार्य हैं । श्रेष्ठ पुरुष किस कार्य से राजी होते हैं? बहुजन हिताय बहुजन सुखाय प्रवृत्ति देखकर श्रेष्ठ पुरुष राजी होते हैं । दूसरों का शोषण करने की प्रवृत्ति से श्रेष्ठ पुरुष राजी नहीं होते । किसीके शोषण से तुम खुश होते हो तो तुम्हारे में श्रेष्ठता नहीं आयी । ऐसा कोई भोग नहीं है कि जो दूसरों के शोषण के बिना भोगा जा सके । भोक्ता अपना और अपने संपर्क में आने वाले का शोषण करता है। भोक्ता कौन होगा ? जो कर्त्ता होगा वही भोक्ता होगा । कर्त्ता को ही भोक्ता बनना पड़ेगा ।

> **जब हमारा कर्त्तापन और भोक्तापन का भाव मिट जायेगा तब सुख के लिए कोई कर्म करने की जरूरत नहीं पड़ेगी । सुख स्वतः मिलेगा । कर्म स्वाभाविक रूप से होगा । सुख हमारा स्वभाव होगा और कर्म शरीर का स्वभाव होगा । कर्त्ता गायब हो जायेगा ।**

जो मनुष्य किसी व्यक्ति के बिना, किसी वस्तु के बिना अकेला खुश रह सकता है वही वास्तव में राजाओं का राजा महाराजा है । उसने महान राज्य प्राप्त किया है । जिसे किसी व्यक्ति की जरूरत पड़ती है, किसी वस्तु की जरूरत पड़ती है, किसी अवस्था की जरूरत पड़ती है तो वह वस्तु, व्यक्ति, अवस्था का दास है ।

ऐसा कोई भोग नहीं है कि जिसमें हिंसा और प्रमाद न हो । आपके मुख में जो कौर आता है वह किसी न किसी जीव के मुख में से छीनकर तुम्हारे पास आता है । खेत में, बगीचे में से असंख्य जीवों की हिंसा करके, उनको मारकर, भगाकर अन्न, फल आदि बचाकर तुम तक पहुँचाया जाता है । बछड़े को गाय से दूर करने से दूध तुम्हारे मुख तक पहुँचता है । शरीर की रक्षा के लिए हम इन चीजों का उपयोग करें तो ठीक है । पर अपने को कर्त्ता मानकर इन चीजों का भोग भोगकर सुखी होना चाहें तो यह प्रमाद और हिंसा हुई । इस प्रमाद और हिंसा के कारण चौरासी लाख योनियों में उल्टे लटककर मुसाफिरी करनी पड़ती है । इसलिए प्रयत्नपूर्वक अपने कर्त्तव्य स्वभाव को मिटाना चाहिए, अहंभाव को परमात्मा में पिघलाना चाहिए ।

जब हमारा कर्त्तापन और भोक्तापन का भाव मिट जायेगा तब सुख के लिए कोई कर्म करने की जरूरत नहीं पड़ेगी । सुख स्वतः मिलेगा । कर्म स्वाभाविक रूप से होगा । सुख हमारा स्वभाव होगा और कर्म शरीर का स्वभाव होगा । कर्त्ता गायब हो जायेगां ।

जो मनुष्य किसी व्यक्ति के बिना, किसी वस्तु के बिना अकेला खुश रह सकता है वही वास्तव में राजाओं का राजा महाराजा है । उसने महान राज्य प्राप्त किया है। जिसे किसी व्यक्ति की जरूरत पड़ती है, किसी वस्तु की जरूरत पड़ती है, किसी अवस्था की जरूरत पड़ती है तो वह वस्तु, व्यक्ति, अवस्था का दास है । भोगी को दिन भर में कितनी कितनी चीजों की जरूरत पड़ती है! किसीको बीड़ी की, किसीको चाय की, किसीको कोकाकोला की जरूरत पड़ती है। सुख के लिए इन चीजों की जरूरत पड़ती है । भोजन की जरूरत तो स्वाभाविक है । परन्तु जिसे सुख के लिए अन्य चीजों की जरूरत पड़ती है वह बेचारा पराधीन है । अपने सुख को तुच्छ चीजों में थोप दिया। वास्तव में इन तुच्छ वस्तुओं में, तुच्छ परिस्थितियों में सुख नहीं है और अपने को कर्त्ता मानकर जहाँ जहाँ सुख की कल्पना करते हैं वहाँ वहाँ सुख का आभास होता है । परिणाम स्वरूप हम उस सुखाभास के पीछे पराधीन हो जाते हैं । परिस्थितियों और आदतों से जकड़ जाते हैं ।

तुम अमृत का कुण्ड हो । मन इस कुण्ड में, विषय या परिस्थितियाँ रूपी पत्थर फेंकता है । अमृत के कुण्ड में से अमृत के छींटे उड़ते हैं । तुम्हें लगता है कि अहा......! मधुरता मिली... आनंद मिला... सुख मिला....! परन्तु यह मधुरता, आनंद, सुख आया कहाँ से ? वही अमृत के कुण्ड में से .... ।

तुम सुखस्वरूप हो । इन्द्रियों का अवलंबन लेकर मन विषय रूपी पत्थर फेंकता है । तुम्हारे अंदर सुख के छींटे उड़ते हैं । तुम्हें लगता है कि विषयों का सुख है, वस्तुओं का सुख है, व्यक्तियों का सुख है । असली सुखस्वरूप, चेतनस्वरूप, आनंदस्वरूप तुम स्वयं हो । नानकजी कहते हैं :

सो साहब सद सदा हजूरे ।
अन्धा जानत ता को दूरे ॥
बिछुड़े हैं जो प्यारे से,
दरबदर भटकते फिरते हैं ।
हमारा यार है हममें,
हमन को बेकरारी क्या ॥

अपना यार, अपना आनंद, अपना सुख तुम स्वयं बन जाते हो.... यदि अपने को वास्तविक रूप से जान

लो तो, आत्मस्वरूप को पहचान लो तो । अपने को यदि कर्त्ता मान बैठे तो परेशानियों की गठरी सिर पर आयी ही समझो । अपने को गाँव का सरपंच माना तो गाँव के लोगों का ख्याल रखना तुम्हारा कर्त्तव्य है । अपनी आत्मा को जान लो तो तुम्हारा क्या कर्त्तव्य है ? बस, स्वतंत्र बादशाह ! राजाओं के राजा ! देवों के देव!

बाहर कोई अच्छी चीज हो तो मनुष्य उसे पकड़ता है, खराब चीज हो तो छोड़ता है । चीज अच्छी या खराब न हो तो उसकी उपेक्षा करता है । परंतु आत्मा की खोज करते करते आत्मा अच्छी होगी तो उसे मनुष्य पकड़ेगा, आत्मा खराब होगी तो उसे छोड़ेगा । अच्छी खराब नहीं लगेगी तो उसकी उपेक्षा करेगा । परन्तु वह आत्मा अपना निजस्वरूप ही हो तो खुद खुद को किस प्रकार पकड़ सकेगा ? खुद, खुद को कैसे छोड़ सकेगा ? खुद खुद की उपेक्षा किस प्रकार कर सकेगा ? बस, भूल निकल गयी । अपनी आत्मा को न ही पकड़ना है और न ही छोड़ना और न ही उसकी उपेक्षा करना है । कर्तृत्व मिट गया ।

देखा अपने आप को,
मेरा दिल दिवाना हो गया ।
ना छेड़ो मुझे यारों,
मैं खुद में मस्ताना हो गया ॥

आज तक न जाने कितने जन्मों में, कितनी चीजों में, कितनी पत्नियों में, कितने पतियों में, कितने बच्चों में, कितनी बातों में फँसते आये हैं । इसलिए एकांत में बैठकर अपने निजस्वरूप की खोज करके कर्त्ताभाव को मिटाना चाहिए । महापुरुषों की शरण में जाकर, मार्गदर्शन लेकर, अंतरंग साधना करके अनुभूति प्राप्त करनी चाहिए और कर्त्तापन हटाना चाहिए । मरने के बाद का वादा नहीं, जीते जी अनुभूति प्राप्त करनी चाहिए ।

दृढ़ श्रद्धा से महापुरुषों की शरण में जाकर दिव्य आध्यात्मिक अनुभूतियाँ जीते जी कर लेनी चाहिए ।

मूंआ पछीनो वायदो नकामो,
को जाणे छे काल ।
आज अत्यारे अब घड़ी साधो,
जोई लो नकदी रोकड़ माल ॥

मरने के बाद कुछ मिलेगा यह वादा करना ही व्यर्थ है क्योंकि कल को कोई नहीं जानता । आज, अभी और इसी समय परमात्मा का अनुभव कर लो ।

भगवद्-दर्शन

श्रीमद् भगवद्गीता में कहा गया है :

विद्याविनयसम्पन्ने
ब्राह्मणे गवि हस्तिनि ।
शुनि चैव श्वपाके च
पण्डिता समदर्शिनः ॥

'ज्ञानीजन विद्या और विनययुक्त ब्राह्मण में तथा गौ, हाथी, कुत्ते और चाण्डाल में भी समदर्शी ही होते हैं ।'
(गीता : ५.१८)

हम लोग तो केवल संतों में, मूर्तियों में भगवान को देखने की कोशिश करते हैं किन्तु संत को प्रत्येक में परमेश्वर ही दिखाई देता है । नामदेव ने कुत्ते में भगवान को देखा । नामदेव ने रोटी बनाकर रखी और घी लेने के लिए अंदर गये । इतने में एक कुत्ता आया और रोटी ले भागा । नामदेव घी की कटोरी लेकर उसके पीछे दौड़े और बोले :

"नाथ ! रूखी रोटी मत खाइये । ठहर जाइए । "

कुत्ता और तेजी से भागा लेकिन नामदेव का दृढ़ विश्वास था कि कुत्ते के अंदर भी परमात्मा ही तो है । आखिरकार कुत्ता रुका और उसने मुँह खोला तो उसके मुख में नामदेव को भगवान के दर्शन हुए ।

हम लोग तो केवल संतों में, मूर्तियों में भगवान को देखने की कोशिश करते हैं किन्तु संतों को प्रत्येक में परमेश्वर ही दिखाई देता है ।

भावो ही विद्यते देवो....

भाव में देव छुपा है । वेदांत दर्शन के अनुसार परमात्मा सर्वत्र है, सबमें है जिसमें जिसकी भावना दृढ़ होती है, उसीसे, वहाँसे ही उसको लाभ होता है । रामतीर्थ कभी परमात्मा के ध्यान में बैठ जाते और पत्नी को बोलते : "तू परमात्मभाव से मेरा पूजन करती है, तो जा, तुझे लाभ होगा ।" और उसे आध्यात्मिकता में बहुत लाभ हुआ । कभी कभी हम लोग सोचते हैं कि भगवान तो निराकार हैं, निरंजन हैं उसे देखें कैसे ? कबीरजी कहते हैं :

अलख पुरुष की आरसी,
साधु का ही देह ।
लखा जो चाहे अलख को,
इन्हीं में तू लख ले ॥

हम लोगों की श्रद्धा भावना होती है तब हम उस अलख, निराकार पुरुष को किसी महापुरुष में लखने का प्रयास करते हैं । वरना उनको तो पूजा क्या और सत्कार क्या ? यश क्या और अपयश क्या ? संत ऐसी जगह पर होते हैं, जहाँ वाणी पहुँच नहीं सकती तो व्यवहार कहाँ से पहुँचेगा ? जिस क्षण हम लोगों के शुद्ध भाव होते हैं और संत परमात्मा की मस्ती में होते हैं तब हम लोगों को लाभ होता है । यह आचार्य पादसेवन की परंपरा है । यह किसी व्यक्ति की बनाई हुई नहीं है । उच्च कक्षा में पहुँचे हुए ऋषि की बनाई हुई है, जिनको तत्त्व का साक्षात्कार हुआ, उन्होंने बनाई है । राजा परीक्षित मरने के करीब थे, तब वे बोले :

"ठहरो ! मुझे मे गुरुदेव के श्रीचरणों का पूज कर लेने दो ।"

शंकर भगवान का पूज वशिष्ठजी ने किया औ वशिष्ठजी का पूजन भगवा राम ने अर्घ्यपाद्य से किया । भगवान श्रीराम और श्रीकृष्ण ने भी गुरु का पूजन किया है । भगत तो सब होते हैं कोई रूपयों के कोई बच्चों के कोई यश के भगत होते हैं । कोई गुरु के भक्त होते हैं, कोई भगवान के भक्त होते हैं । जो गुरु के भक्त हैं वे भगवान के भक्त होंगे और जो भगवान के भक्त हैं वे गुरु के भक्त होंगे ही । गुरु और भगवान मूर्तिभेद से दो दिखते हैं । दोनों में उसी आत्मदेव की ही पूजा है । उस परमात्मा की ही पूजा है । गुरु और ईश्वर में जो चमक रहा है वह चेतन है ।

ईश्वरोगुरुरात्मेति मूर्तिभेदे विभागिनोः ।

आकाश व्यापक है ऐसे ही परब्रह्म परमात्मा व्यापक है । जो आकाश पहले घड़े में है वही दूसरे घड़े में है। ऐसे ही जो चैतन्य परमात्मा सगुण साकार में है वही गुरुओं की और हम लोगों की देह में है । वह चैतन्य हमारी देह में प्रगट हो इसीलिए गुरुओं की देह में परमात्मा की भावना की जाती है । फिर गुरु बताते हैं कि तू भी वही है ? ॐ... ॐ....

रूपये देकर आप परमात्मा को नहीं खरीद सकते । रूपये देकर आप आत्म-साक्षात्कार नहीं कर सकते । रूपये देकर आप जन्म-मरण से पार नहीं हो सकते । रूपये देकर आप मोक्ष नहीं पा सकते । लेकिन समय देकर आप साधन-भजन करते हैं तो मोक्ष आप के हृदय में प्रगट होने लगता है । कबीरजी ने कहा :

प्रेम न खेतों ऊपजे
प्रेम न हाट बिकाय
राजा चहौं प्रजा चहौं

शीश दिये ले जाय ॥

हमारे और ईश्वर के बीच अहंकार का पर्दा है । अहंकार ही बाधा है । साधन–भजन से वह विसर्जित होता है, सरलता छलकने लगती है । दान–पुण्य करने से आसक्ति घटती है और औदार्यसुख प्रकट होता है । एक घड़ी ऐसी आती है कि कुछ बचा हुआ अहं होता है वह 'तत्त्वमसि' महावाक्य के उपदेश से खिसक जाता है और जीव परमात्मा का साक्षात्कार करके परमात्मामय हो जाता है । फिर उसमें और ब्रह्म परमात्मा में दूरी नहीं रहती ।

तलवार लेकर मैदान में शत्रुओं को मार देना बड़ी बात नहीं है । फायर ब्रिगेड़ के साधनों से पानी डालकर अग्नि बुझा देना बड़ी बात नहीं है । किन्तु हृदय की अशांति को मिटाना बड़ी बात है । हृदय की अशांति और हृदय में छुपे हुए जो शत्रु हैं अज्ञान, आवरण, विक्षेप, अविद्या, अस्मिता, रागद्वेष, काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर आदि, वे न तलवार से मारे जा सकते हैं और न ही फायर ब्रिगेड़ के साधनों के द्वारा आग की तरह बुझाये जा सकते हैं । ये शत्रु तो संतों की कृपा द्वारा ही खत्म हो सकते हैं । संत कबीर कहते हैं :

सद्गुरु मेरा शूरमा, करे शब्द की चोट ।
मारे गोला प्रेम का, हरे भरम की कोट ॥

जो भ्रम घुसा हुआ है, इस देह को 'मैं' मानकर संसार में सुख खोजने का, वह भ्रम सद्गुरु की कृपा से दूर हो जाता है और जहाँ सुख–स्वरूप आत्मा है, उधर की ओर आदमी की यात्रा होने लगती है । कबीर ने कहा है ।

यह तन विषकी बेलरी, गुरु अमृत की खान ।
सिर दीजे सत्गुरु मिले, तो भी सस्ता जान ॥

यह हमारा शरीर विष की बेल है । स्वादिष्ट मिठाइयाँ खाने के बाद, सोने के बर्तनों में विभिन्न पकवानों का भोग लगाने के बाद सुबह उनकी क्या हालत होती है ? भोजन करने के लिए एक चम्मच उठाया, दूसरा उठाने को हैं, उस समय कोई साधु आवें तो आप यह नहीं कह सकते कि : "महाराज ! भोजन कीजिये ।" क्योंकि भोजन जूठा हो गया । यह शरीर पवित्र चीज को भी अपवित्र बना देता है । जो साक्षात्कारी पुरुष हैं वे अमृत की खान होते हैं । साक्षात्कार होता है तब हृदय परमात्मा के अनुभव से पावन होता है, वह हृदय जिस शरीर में है उसके चरण जहाँ पड़ते हैं वह भूमि पवित्र हो जाती है । वह पुरुष तीर्थ आदि पवित्र करनेवालों को भी पवित्र कर देता है ।

तुलसीदासजी ने कहा :

तुलसी तुलसी क्या करौं,
तुलसी बन की घास ।
कृपा भई रघुनाथ की तो,
हो गये तुलसीदास ॥

❀

भारत को अब तो जागना ही पड़ेगा...

संत नामदेव महाराज 'विठ्ठला... विठ्ठला' करके अंतर्यामी परमात्मा की शरण में रहते थे । नामदेव महाराज की भगवदरस से परिपूर्ण वाणी सुनकर महाराष्ट्रीयन एवं दूसरे भाई लोग उन्हें भगवान का खास संत मानने लगे ।

उस समय अलाउद्दीन खिलजी का राज्य था । उसने नामदेव को बुलवाया । मृतक गाय बताकर कहा :

"यदि तुम सच्चे संत हो तो इस गाय को जीवित करो ।"

लोग मन में विचार करते कि मुल्ला–मौलवियों को कहो कि गाय को जीवित कर दें । उन्हें क्यों नहीं कहते ? हमारे नामदेव ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ?

किसी हिन्दू राजा ने मुसलमान पीर–फकीर को नहीं कहा कि इस बिल्ली को जीवित कर दो, इस बकरी

को जीवित कर दो, नहीं तो तुम्हारा गला काट दिया जायेगा। इतिहास साक्षी है। जबकि मुसलमानों का धर्मग्रंथ कुरान तो इससे बिल्कुल विरुद्ध बात कहता है : "उन काफिरों से लड़ो। अल्लाह तुम्हारे हाथों उन्हें यातना देगा और उन्हें रुसवा करेगा और उनके मुकाबले में तुम्हारी सहायता करेगा और ईमानवालों के दिल ठण्डे करेगा।" । संत नामदेव को अलाउद्दीन खिलजी कहता है : "ओ काफिर की औलाद! तू 'विठ्ठल विठ्ठल' तो करता है, मगर तेरा विठ्ठल सच्चा हो तो मरी हुई गाय को जीवित कर दे, नहीं तो ईस्लाम धर्म अंगीकार कर।"

किसी हिन्दू राजा ने मुसलमान पीर फकीर को नहीं कहा कि इस बिल्ली को जीवित कर दो, इस बकरी को जीवित कर दो, नहीं तो तुम्हारा गला काट दिया जायेगा । इतिहास साक्षी है ।

नामदेव कहते हैं : "अपने धर्म में मरना पसंद है, पर तुम्हारे ईस्लाम धर्म में मैं नहीं आ सकूँगा।"

तब अलाउद्दीन कहता है :"इस काफिर को जंजीरों से बाँध दो । पैर में बेड़ियाँ और हाथ में हथकड़ियाँ डाल कर मरी हुई गाय के सामने खड़ा कर दो । गाय जीवित न करे तब तक उसे जाने मत देना । शाम तक यदि गाय जीवित न हुई तो काफिर ! तेरा सिर धड़ से अलग कर दिया जायेगा।"

भक्तहृदय नामदेव भगवान से प्रार्थना करते हैं :

"हे मेरे विठ्ठल ! मैं क्या जानूँ कि गाय को कैसे जीवित किया जाये ? मैं तो कुछ नहीं जानता । तुम्हीं जानो और तुम्हारा काम जाने, विठ्ठल.... विठ्ठल.... विठ्ठल...."

हम सहिष्णु हैं और रहेंगे । यह तो हमारे खून में है । परन्तु हम कायर रहें, बुद्धू रहें और देशद्रोही लोग बम-धड़ाके करते हों, दूसरे राष्ट्र हमारे राष्ट्र को खण्ड खण्ड करने के लिए दिन रात षड़यंत्र करते हों और उनके साथ मिलकर देश में रहने वाले गद्दार लोग देश के साथ गद्दारी करें तो हमें सावधान होने के सिवाय और कोई चारा नहीं है ।

ऐसा कहते कहते वे सं[illegible] अन्तर्मुख हो गये । अंतर्या[illegible] प्रभु को लगा कि दुष्ट मे[illegible] भक्त की हत्या करेगा त[illegible] अच्छा न होगा । भगवान क[illegible] कृपा हुई और गाय जीवित ह[illegible] गयी । तब वह निर्दयी, जुल्म[illegible] अलाउद्दीन खिलजी कहता है

"अच्छा, तुम सच्चे संत हो, मैं तुम्हें माफ करता हूँ।"

माफ क्या किया ? उसने तो खूब जुल्म किया, परं[illegible] भगवान सहायक हुए ।

संत तुलसीदास और संत सुरदास को औरंगजेब ने आदमी भेजकर बुलवाया :

"तुम दरबार में आओ।"

"क्या काम है ?"

"बस, जहाँपनाह का हुक्म है।"

हुक्म के चाकर उन संतों को ले गये । औरंगजेब ने संत तुलसीदास से कहा :

"कुछ चमत्कार दिखाओ।"

संत बोले : "हम तो राम-राम जपते हैं । हम चमत्कार नहीं जानते।"

"काफिर ! कुछ चमत्कार दिखाओ नहीं तो तुम्हें जेल में डाल दिया जायेगा।"

तुलसीदास को जेल में बंद कर दिया गया । उन्होंने औरंगजेब का क्या बिगाड़ा था ? वे कुछ बिगाड़ें ऐसे थे क्या ? वे तो 'सर्वे भवन्तु

सुखिनः' की जीती जागती प्रतिमा थे ।

मुझे तो महापुरुषों और समझदारों ने कहा है कि भगवान राम आये तो मर्यादा का प्रचार–प्रसार हुआ । भगवान श्रीकृष्ण आये तो प्रेमाभक्ति का प्रचार–प्रसार हुआ, वैसे ही महावीर आये तब **'अहिंसा परमो धर्मः'** का प्रचार–प्रसार हुआ । परन्तु जब से मजहबवादी आये तब से धर्म के नाम से तलवार, मारा–मारी और काटा–काटी हुई है । वे कहते हैं कि जो हमारे मजहब (धर्म) को नहीं मानते उन्हें जोर, जुल्म, जबरदस्ती से मनवाओ नहीं तो उनका कत्ल करो । उनकी बहू–बेटियों की हत्या न करो परंतु उन्हें अपने घर में लाओ । उनके द्वारा खेती कराओ, संतान पैदा करो और अपने मजहब को बढ़ाओ ।

यह सब देश के लिए हितकर नहीं है । जल्दी सावधान होना पड़ेगा ।

तुलसीदासजी महाराज को जेल में धकेल दिया गया। वे करें क्या ? और हिन्दू प्रजा भी क्या करे ? 'हे मेरे राम ! हमारे संत की रक्षा करना । यह दुष्ट औरंगजेब ऐसा जुल्म करता है...' इस प्रकार बहनें और भाई लोग भगवान से प्रार्थना करें, और क्या करें ?

तुलसीदासजी 'राम....राम...राम....राम...' कहते अन्तर्यामी की शरण में गये हैं :

"हे मेरे अन्तर्यामी ! तुम जानो और तुम्हारा काम जाने ?"

अन्तर्यामी राम से यह सहन न हुआ । हनुमानजी की सेना सुबह में एकदम पहुँच गयी औरंगजेब के महल में । चारों ओर बंदर ही बंदर । हुप...हुप...हुप.... किसीका बुरखा खींचा तो किसी दरबारी की मूंछें खींची तो किसीका ताज खींचा । वानर सेना ने धमाचौकड़ी मचा दी । तब औरंगजेब को पता चला कि अन्तर्यामी भगवान राम तुलसीदासजी के साथ हैं । उन्हें परेशान करने में कोई सार नहीं है । तब उस दुष्ट ने संत की वंदना की है ।

ऐसा कोई हिन्दू राजा तुम्हें इतिहास में नहीं मिलेगा कि जिसने मुसलमान पीर–फकीर के साथ किसी भी दिन ऐसी कोई दुष्टता की हो ।

हम सहिष्णु हैं और रहेंगे । यह तो हमारे खून में है । परन्तु हम कायर रहें, बुद्धू रहें और देशद्रोही लोग बम–धड़ाके करते हों, दूसरे राष्ट्र हमारे राष्ट्र को खण्ड खण्ड करने के लिए दिन रात षड़यंत्र करते हों और उनके साथ मिलकर देश में रहने वाले गद्दार लोग देश के साथ गद्दारी करें तो हमें सावधान होने के सिवाय और कोई चारा नहीं है ।

❀

पू. बापू का आध्यात्मिक शंखनाद

– आर. कुसुमाकर, इन्दौर ।

पश्चिम की देन है भौतिकवाद और उपभोक्ता संस्कृति तथा पूरब की देन है अध्यात्मवाद, वीतरागिता और पद्मपत्रवत् सांसारिक जीवनयापन । एक का लक्ष्य है भोग–विलास, देहात्मबुद्धि और मृग–मरीचिका के पीछे दौड़ना जबकि दूसरे का लक्ष्य है आत्मदेव की साधना और प्राणीमात्र से एकात्म की अनुभूति को प्राप्त कर आचरण में उसकी अभिव्यक्ति । पश्चिम प्रवृत्तिमूलक है, पूरब निवृत्तिप्रधान । एक जहाँ अर्थ और काम को अपना मुख्य पुरुषार्थ मानता है, तो दूसरा धर्म और मोक्ष को । ऐसी स्थिति में पश्चिम और पूरब की अलग अलग दिशाओं की आस्था और निष्ठा ने विश्व–मानवता की एकता में एक ऐसी विभाजक रक्त–रेखा खींच दी है, जिसके कारण विसंगतियों, विकृतियों और मानसिक प्रदूषणों ने जन्म ले लिया है । यही कारण है कि जहाँ संसार अतिसुख से पीड़ित है, वहीं वह अति दुःख से भी क्रन्दनरत है, पीड़ित है, संतप्त है ।

इतिहास इस आर्यसत्य का साक्षी है कि भारत अपने

विकास के प्रारंभिक काल से ही अध्यात्म जीवन–दर्शन का प्रबल प्रवक्ता रहा है । यहाँ त्रिकालज्ञ ऋषि–मुनियों, महर्षियों और चिन्तकों ने मानव जाति की एक और अखण्ड रूप में प्राणप्रतिष्ठा की है । उन्होंने खण्ड सत्य को कभी मान्यता नहीं दी । धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार पुरुषार्थों का उन्होंने समान रूप से स्वीकार किया। उनकी उपयोगिता को वैज्ञानिक दृष्टि से सिद्ध किया । उसे लोकजीवन के व्यावहारिक धरातल पर उतारा । उनमें सन्तुलन और समन्वय स्थापित किया । जबकि पश्चिम ने केवल अर्थ और काम को प्रधानता दी तथा धर्म और मोक्ष को अनदेखा कर दिया ।

पश्चिम के देहसुख–प्रधान भौतिकवाद की प्रचण्ड आँधी बह रही है । उसने हमारे आध्यात्मिक मूल्यों को तहस–नहस कर डाला है । भौतिक सुखों ऐश्वर्यों की चमक–दमक के पीछे मानव जाति पागल हो गयी है । इसके दुष्प्रभावों और प्रदूषणों ने भारत के आध्यात्मिक सूर्य और चन्द्रवंशी सन्तानों को राहु और केतु के समान पूरी तरह ग्रस लिया है ।

हमारे क्रान्तचेता ऋषियों ने सामंजस्य और समाहिति के लचीले श्वेत, श्याम जीवनपट पर जिस कमलवन और गंधमादन पर्वत को आकारित किया वह उनके सौन्दर्य–बोध का एक जीवंत प्रतीक है । इसी शीर्षबिन्दु पर उनकी कारचित्री और भावचित्री प्रतिभाओं के उदयाचलों का संगम होता है। यहाँ शील और शक्ति के निर्झर अपनी शत–सहस्र धाराओं से निखिल मानवता का अभिषेक करके परिलक्षित होते हैं ।

इस देश में जहाँ एक ओर पूंजी के नभचुम्बी पर्वत खड़े हो गये, अमीरी इठलाने लगी, वहीं गरीबी के गहरे गड्ढे बनते गये, बनते जा रहे हैं । भूख, बेरोजगारी, अज्ञान और अशिक्षा की आसुरी सत्ता अट्टहास कर रही है । ऐसी स्थिति में पू. बापू के आध्यात्मिक शंखनाद को कान खोलकर सुनने और उस पर अमल करने के अलावा इस देश का कोई उज्ज्वल भविष्य नहीं है ।

आज विश्व की स्थिति बिल्कुल बदल गयी है । पश्चिम के देहसुख–प्रधान भौतिकवाद की प्रचण्ड आँधी बह रही है । उस हमारे आध्यात्मि मूल्यों क तहस–नहस क डाला है । भौति सुखों ऐश्वर्यों क चमक–दमक वे पीछे मानव जा पागल हो गयी है इसके दुष्प्रभाव और प्रदूषणों भारत वे आध्यात्मिक सू और चन्द्रवंशी सन्तानों को राहु और केतु के समान पू तरह ग्रस लिया है । इसीका यह परिणाम है कि आ प्रत्येक भारतीय कार, बंगला, कीमती फर्नीचर और बैं बेलेन्स के सुरक्षारूपी विस्तार के लिए एक ऐसी अंध दौड़ में शरीक हो गया है कि उसके आध्यात्मिक विका की सारी संभावनाएँ छिन्न–भिन्न और नष्टप्रायः हो गय हैं । भारत के लिए यह एक गंभीर खतरा है, जिसक ओर हम आँखें नहीं मूँद सकते ।

भारती

अध्यात्म आकाश वे सूर्य संत श्र आसारामजी बापू भौतिकवाद के इ तिमिरासुर क व्यासमुद्रा में अपन विज्ञानदीप्त धर्मवाण में ललकारा है : 'भा रे भाग, इस पुण्यभू से भाग । यहाँ ते कोई काम नहीं, को धाम नहीं ।'

उन्होंने भारतियों को चेतावनी दी है : "सावधान ! बहुत पसारा मत करो ।"

कबीर का हवाला देते हुए उन्हींके शब्दों में बापू उच्चार करते हैं :

बहुत पसारा मत करो,
कर थोड़े की आस ।
बहुत पसारा जिन किया,
वे भी गये निराश ।।

बापू ऊर्ध्वबाहु हो आगे कहते हैं :

"सुन्दर सदन और फर्नीचर सजाने में समय शक्ति का व्यय मत करो । दिल को निर्भिक, सम, शान्त और आत्मानन्द से उन्नत करो, भक्ति, ज्ञान से सजाओ । "

बापू का आत्मनाद है : "किसी भी चीज को ईश्वर से अधिक मूल्यवान मत समझो ।"

वे आगे कहते हैं : "अनेक साधक सुख के पीछे भागकर इष्टमार्ग से च्युत हो जाते हैं । बाहर का जो सुख मिलेगा, वह टिकेगा नहीं । जो वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति सुखद लगेगी वह आखिर में तुम नहीं चाहो, फिर भी दुःखद बन जाएगी ।"

कोई भी व्यक्ति दुःख नहीं चाहता । सभी सुख को चाहते हैं । लेकिन वे सच्चे और नकली सुख में कोई फर्क न समझने के कारण अंतिम साँस तक भटकते चक्कर खाते रहते हैं और सच्चे आत्मसुख से वंचित होकर मानवजीवन को निरर्थक और निष्फल बना लेते हैं ।

श्रमण संस्कृति में भौतिक सुखों के एकीकरण और संग्रहण को 'परिग्रह' माना है । परिग्रही कभी सच्चे अर्थ में धार्मिक और आत्मवादी नहीं हो सकता । अतः इसने 'अपरिग्रह' अपनाने पर पूरा बल दिया है । इसके अनुसार आवश्यकता से अधिक रखने को सामाजिक अपराध घोषित किया गया है । किन्तु अपरिग्रह के व्यवहार और आचरण के धरातल पर पूरी इमानदारी के साथ नहीं उतारा जा सकता । यही कारण है कि इस देश में जहाँ एक ओर पूंजी के नभचुम्बी पर्वत खड़े हो गये, अमीरी इठलाने लगी, वहीं गरीबी के गहरे गड्ढे बनते गये, बनते जा रहे हैं । भूख, बेरोजगारी, अज्ञान और अशिक्षा की आसुरी सत्ता अट्टहास कर रही है । ऐसी स्थिति में पू. बापू के आध्यात्मिक शंखनाद को कान खोलकर सुनने और उस पर अमल करने के अलावा इस देश का कोई उज्ज्वल भविष्य नहीं है ।

"सुन्दर सदन और फर्नीचर सजाने में समय शक्ति का व्यय मत करो । दिल को निर्भिक, सम, शान्त और आत्मानन्द से उन्नत करो, भक्ति, ज्ञान से सजाओ ।"

सब गमों को मिटानेवाला संत–समागम

एक बार भगवान राम के गुरु वशिष्ठजी महाराज काकभुशुंडिजी के आश्रम में गये । काकभुशुंडिजी ने वशिष्ठजी का आदर–सत्कार किया । तत्पश्चात् वे वशिष्ठजी से बोले :

"हे भगवन् ! आपके दर्शन से मैं आनंदवान हुआ हूँ । ऐसा भला कौन है जो संत के दर्शन से निर्दोष आनंद को प्राप्त न हो ?"

पति–पत्नी का आनंद निर्दोष नहीं है । वहाँ काम है । विषय–विकारों एवं विलास से जो आनंद आता है वह निर्दोष आनंद नहीं है ।

काकभुशुंडिजी कहते हैं : "हे मुनीश्वर ! आपके दर्शनमात्र से मैं निर्दोष आनंद को प्राप्त हुआ हूँ । जैसे चन्द्रमा को देखकर

शीतलता उपजती है परंतु वह गौण शीतलता है । हृदय की तपन को वह नहीं मिटाती जबकि संतों के संग से हृदय की तपन मिटती है और अन्तरतम आत्मा में शीतलता का प्रसाद प्राप्त होता है । ”

चन्द्रमा को देखकर शीतलता उपजती है परंतु वह गौण शीतलता है । हृदय की तपन को वह नहीं मिटाती जबकि संतों के संग से हृदय की तपन मिटती है और अन्तरतम आत्मा में शीतलता का प्रसाद प्राप्त होता है ।

संत का संग सबसे उत्तम माना गया है । रामायण में भगवान शंकर पार्वतीजी से कहते हैं :

उमा संत समागम सम,
और न लाभ कछु आन ।
बिनु हरि कृपा उपजे नहीं,
गावहिं वेद पुरान ।।

सत्संग हरि की कृपा के बिना नहीं मिलता । शिवजी ने ऐसा तो नहीं कहा है कि रूपया समागम सम... स्वर्ग समागम सम... केनेड़ा समागम सम... डालर समागम सम... नहीं ।

वेद, पुराण सबका यह अनुभूत मत है कि संत–समागम से बढ़कर जगत में और कोई लाभ नहीं होता । संत–समागम से यह लोक तो स्वर्गमय हो जाता है, परलोक भी स्वर्गमय हो जाता है । संत–समागम से सब मिलता है – ज्ञान मिलता है, भक्ति मिलती है, प्रेम मिलता है, स्वास्थ्य मिलता है । यह तो ठीक, लेकिन जिससे सब मिलता है ऐसा सबका जो सर्वेश्वर है वह भी तो संत–समागम से ही मिलता है ।

इसलिये हमारी यह आकांक्षा बनी रहे : “तू चाहे मुझे नरक में फेंक दे, चाहे विघ्न और बाधाओं के बीच फेंक दे, लेकि हे प्रभु ! इत कृपा जरूर कर कि संत–समाग बना रहे, सत्सं मिलता रहे ।”

फिर नर की क्या ताकत है कि नारकीय जीवन दिखा सके विघ्न–बाधाओं की ताकत नहीं कि चित्त को क्षोभित क दें । जीवन में कभी सत्संग मिला नहीं इसलि विघ्न–बाधाओं का प्रभाव पड़ता है, हर आनंद के पहल दुःख में बदल रहे हैं । लेकिन जहाँ सत्संग होता है वह तो दुःख भी सुख में परिवर्तित हो जाता है ।

मीरा को कितना दुःख था फिर भी सत्संग, भक्ति ध्यान के सहारे उसने सारे दुःखों के सिर पर पैर रखक सुख ही सुख पाया और अन्यों को भी भरपूर मात्रा में वितरित किया । सुख बाँटते समय जो सुख लेने आये थे उनको तो मिला ही लेकिन उदा जैसी ईर्ष्याखोर ननद और विक्रमराणा जैसे विघ्न–बाधा डालकर दुःख देने वालों को भी मीरा ने सुख ही दिया क्योंकि मीरा के पास सुख ही सुख था ।

जिसको गाने का शौक होता है, जो सतत गाता है, शौक से जो प्रसन्न होता है ऐसा प्रसन्नात्मा जब रोता है तो उसका रोना भी गाना बन जाता है । जिसको गाने की आदत है उसका रोना भी गाना हो जाता है और जिसको रोने की आदत है उस कम्बख्त का गाना भी रोना बन जाता है ।

अमेरिका में Work, Woman And Weather **का कोई भरोसा नहीं होता । मौसम का कोई भरोसा नहीं होता कि कब बदल जाए और काम से भी कब छुट्टी मिल जाए । कोई पता नहीं कि कल नौकरी पर आना है कि नहीं । ऐसे ही पत्नी का भी कोई भरोसा नहीं कि कितने दिन की पत्नी है ।**

‘क्या करें... ? संसार ऐसा है .... कलियुग है... घर से

छुट्टी नहीं मिलती है... पूरा नहीं होता... इसने यह कर दिया... उसने वह कर दिया... आजकल ऐसा है... आजकल वैसा है... राजनीति ऐसी है... व्यापारी ऐसे हैं...

'यह ऐसा है.... वह वैसा है...' यह सोचकर चित्त मलिन मत करो । यह तो कई कई बार सृष्टियों में उथल पुथल हुई और बदली लेकिन उन सबमें अबदल परमात्मा है उसकी ओर निगाह रखकर मौज कर यार....!

अमेरिका के मानवतावादी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन जब राष्ट्रपति नहीं बने थे तब की बात है । अपने मित्र के साथे वे एक बार वन–विहार करने को गये ।

अमेरिका में Work, Woman And Weather का कोई भरोसा नहीं होता । मौसम का कोई भरोसा नहीं होता कि कब बदल जाए और काम से भी कब छुट्टी मिल जाए । कोई पता नहीं कि कल नौकरी पर आना है कि नहीं । ऐसे ही पत्नी का भी कोई भरोसा नहीं कि कितने दिन की पत्नी है ।

ऐसे मौसम में वे घूमने गये और एकाएक आँधी तूफान चला । अब्राहम लिंकन का मित्र धरती पकड़कर Oh ! My God ! करके बैठ गया । आँखें बन्द हो गई और चक्कर खाने लगा लेकिन अब्राहम लिंकन.... वे तो मुस्कुरा रहे हैं । कुछ समय पश्चात् मौसम पुनः सामान्य हो गया ।

मित्र कहने लगा : "मिस्टर लिंकन ! तुम तो खुश नजर आ रहे हो ! इतने आँधी तूफान चले कि पेड़ पौधे हिल गये और तुम यथावत् खड़े रहे ! क्या बात है ?"

अब्राहम लिंकन ने कहा : "तुम्हारी नजर हिलने वाले पर थी, फरियादी थी लेकिन मैं तो इन हिलने वालों में न हिलने वाले को ढूँढ रहा था, देख रहा था । ये बादल दौड़ रहे थे, बिजलियाँ चमक रही थी, पेड़ पौधे हिल रहे थे, इन सबको तुम देख रहे थे लेकिन मेरी नजर अचल पहाड़ों की ओर थी जो तटस्थ थे ।"

अगर ज्ञानी गुरु की कृपा होती तो अब्राहम लिंकन की नजरें अचल पहाड़ों की ओर ही नहीं अचल परमेश्वर 'सोहं' की ओर भी पहुँच जाती । फिर भी अच्छे थे वे, धन्यवाद के पात्र हैं ।

पूजने योग्य तो वे ब्रह्मवेत्ता होते हैं, जिनकी निगाहें अचल आत्मा पर होती हैं और धन्यवाद के पात्र वे लोग होते हैं जो अचल वस्तुओं पर टिक कर चल में चलित होने में भी कुछ मात्रा में चित्त को स्थिर रखते हैं ।

अब्राहम लिंकन ने कहा "चारों ओर इतना चल हो रहा था फिर भी जो नाच रहा था, झूम रहा था, थिरक रहा था गुलाब का पौधा और उस पर लगे हुए फूल में मधुमक्खी अपना काम किये जा रही थी, रस लिये जा रही थी । मैंने देखा कि इतने चल में भी वह अपना कार्य कर रही है, रस ले रही है तो मैं भी इस चल वातावरण में अपने मालिक को, God को प्यार करते हुए रस क्यों न ले लूँ । क्यों फरियाद करूँ ?"

एक मधुमक्खी जितनी अक्ल तो जरूर होनी चाहिये न ! फूल कितना हिलता डुलता है फिर भी वह चिपकी रहती है । ऐसे ही तुम्हारा मन, बुद्धि, शरीर, संसार कितना भी हिले डुले फिर भी तुम चिपके रहो अपने आत्मभाव में.... ।

उठत बैठत वही उटाने ।
कहत कबीर हम उसी ठिकाने ॥

सद्गुरु–महिमा

भीष्म पितामह शरशैय्या पर सोये हुए थे । भगवान श्रीकृष्ण, युधिष्ठिर, अर्जुन आदि उनसे मिलने गये । भीष्म की आँखों में आँसू थे । श्रीकृष्ण ने पूछा :

"किस कारण से आपकी आँखों में आँसू ? आप दुःखी क्यों ? बाणों की नोंक पीड़ा दे रही है क्या ?"

भीष्म पितामह बोले :

"बाण इतनी पीड़ा नहीं देते । पीड़ा तो होती है

किन्तु आँसू किसी और कारण से हैं । अर्जुन जैसा गांडीव धनुषधारी, धर्म के अवतार युधिष्ठिर महाराज, भीम जैसा भाई, जिनके साथ सदा श्रीकृष्ण हों ऐसे पाण्डव भी संसार में दुःखी हुए तो दूसरों की क्या बात ?"

"अर्जुन जैसा गांडीव धनुषधारी, धर्म के अवतार युधिष्ठिर महाराज, भीम जैसा भाई, जिनके साथ सदा श्रीकृष्ण हों ऐसे पाण्डव भी संसार में दुःखी हुए तो दूसरों की क्या बात ?"

पाँचों पाण्डव अपनी अपनी शक्ति में अद्‌भुत हैं, श्रीकृष्ण जिनके साथ नित्य हैं ऐसे पाण्डवों को भी संसार में तृप्ति न मिली । विघ्न-बाधाएँ, परेशानियाँ सहनी पड़ी तो दूसरे जीवों की बिसात ही क्या है ? इसीसे शास्त्रों ने, महापुरुषों ने संसार को दुःखालय कहा है ।

कर्त्ता हजार वर्ष एकांत में बैठकर माला करे, मनमानी साधना करे तो भी इतनी ऊँची स्थिति नहीं मिलती, जितनी ऊँची स्थिति आत्म-साक्षात्कारी महापुरुषों के संग से मिलती है । चौदहसौ वर्ष के चांगदेव, जब बाईस वर्ष के ज्ञानेश्वर गुरु के शरण में गये तब बेड़ा पार हुआ ।

इसीलिए मीराबाई ने कहा :

अड़सठ तीरथ संतोना चरणे,
संतोनी चरणरज ऊडी ऊडी लागे मोरे अंग,
बेनुड़ी मने भाग्ये मळयो सत्संग...

भगवान श्रीकृष्ण ऋषियों के पैर धोते हैं । भागवत के दसवें स्कंध में ८४ वें अध्याय में १२ और १३ वें श्लोक में यह बात आयी है । ऋषि कहते हैं कि हम आपको पहचानते हैं । ऐसा करने की आपको क्या जरूरत है ? तब प्रभु कहते हैं :

"पचास वर्ष की निष्कपट भक्ति करने से हृदय का अज्ञान नहीं जाता, परन्तु आपके जैसे ज्ञानवान् पवित्र संतों का एक मुहूर्त का सत्संग हृदय का अज्ञान दूर कर देता है ।"

आत्मज्ञानी महापुरुषों के एक मुहूर्त के सत्संग से जो समझ आती है वह अद्‌भुत होती है । मान्यताओं को मानो तो सच हैं और न मानो तो वे कुछ नहीं हैं। तुम जिन मान्यताओं को पकड़ बैठे हो, उन्हें मानो तब तक वे सत्य हैं, उन्हें मानना छोड़ दो तो उनका कोई मूल्य नहीं रहता । तुम अपने को भगत मानो और माला घुमाते जाओ तो तुम्हारी वह मान्यता जाती नहीं । मान्यता साधन भजन से नहीं जायेगी । साधन से तो मान्यता मजबूत होगी । 'मैं भगत हूँ । खूब मालाएँ करूँ जिससे मेरा कल्याण हो ।'

किसका कल्याण हो ? भगत का ।

तो भगत तो रहा ही । भगत मरा नहीं । जीवत्व और कर्तृत्व भोक्तृत्व मरा नहीं ।

मान्यता को न मानो तो मान्यता की कोई ताकत नहीं है । मान्यता को पकड़ रखो तो किसी साधन की ताकत नहीं है कि मान्यता छुड़ा दे । साधन से मान्यता नहीं छूटती । मान्यता छूटती है सत्संग से ।

सत्संग और महापुरुषों की कृपा का वर्णन नहीं हो सकता । उनकी महिमा अपार है । ज्ञानवान के लिए अष्टावक्र मुनि कहते हैं :

तस्य तुलना केन जायते ॥

उनकी तुलना किसके साथ की जा सकती है ? वशिष्ठजी महाराज कहते हैं :

"हे रामजी ! ज्ञानवान का वर्णन किस प्रकार किया जाये ? उनके थोड़े-से लक्षण ही बताये जा सकते हैं परन्तु वास्तव में ज्ञानवान की गति तो ज्ञानवान ही जानें ।"

श्रीरामचन्द्रजी का वैराग्य

सोलह वर्ष की वय में भगवान श्रीरामचन्द्रजी अपने पिता से आज्ञा लेकर तीर्थयात्रा करने निकले और सभी तीर्थों के दर्शन एवं दान, तप, ध्यान आदि करते हुए एक वर्ष बाद पुनः अयोध्या लौटे । तब एकान्त में श्रीराम विचार करते हैं :

"जितने भी बड़े-बड़े राजा, महाराजा, धनाढय और श्रीमंत थे उनके अवशेषों को गंगा किनारे लाकर लोग आँसू गिराकर चले जाते हैं। इस प्रकार इस जगत की वस्तुओं में खेलने वाले जीवों के सारे अवशेष भी गंगा नदी में बह जाते हैं ।"

दूसरा कोई पूरा ग्रन्थ आप न पढ़ सकें तो 'योगवाशिष्ठ' का वैराग्य प्रकरण ही पढ़ लेना ताकि पुनरावृत्ति किस तरह से होती है यह समझ में आ जाएगा । आपके हृदय के द्वार खुलने लगेंगे ।

श्रीरामचन्द्रजी विवेक वैराग्य के उपरोक्त विचारों में निमग्न थे कि विश्वामित्र मुनि श्रीराम और लक्ष्मण को अपने साथ ले जाने के लिए राजा दशरथ के यहाँ आये । दशरथ की नजरें जैसे ही विश्वामित्र पर पड़ीं उन्होंने सिंहासन से उतरकर दंडवत् प्रणाम करके महर्षि विश्वामित्र का आदरपूर्वक सत्कार किया तथा आगमन का कारण पूछा । तब विश्वामित्र ने अपने यज्ञ की रक्षार्थ दशरथ से राम और लक्ष्मण को अपने साथ भेजने को कहा । विश्वामित्र के वचन सुनकर दशरथजी मूर्छित जैसे होने लगे । तब वशिष्ठजी ने उनसे कहा :

"राजन् ! आप चिन्ता न करें । विश्वामित्र सुयोग्य सामर्थ्यवान हैं । ये परम तपस्वी हैं । इनसे बड़ा वीर पुरुष तो देवताओं में भी नहीं है । आप निर्भय होकर राम लक्ष्मण को विश्वामित्रजी के साथ भेज दीजिए ।"

महर्षि वशिष्ठ के वचन सुनकर राजा दशरथ सहमत हो गये । उन्होंने राम को बुलाने के लिए सेवक भेजा । लौटकर सेवक कहता है :

"रामचंद्रजी तो एकान्त कक्ष में बैठे हैं । हास्य विनोद की वस्तुएँ देने पर वे कहते हैं – ये नश्वर वस्तुएँ लेकर मुझे क्या करना है ? तुम तो एक मृग की भाँति हो जो हरे-भरे घास के आकर्षण में बह जाता है और शिकारी उसे मार डालता है । उसी प्रकार तुम भी इन भोग-पदार्थों में फँस जाते हो और असमय काल के गाल में समा जाते हो । ऐसे भोग-पदार्थों में मुझे समय बरबाद नहीं करना है अपितु मुझे आत्मतत्त्व का अनुसंधान करना है ।"

तब समस्त साधुगण, ऋषि-मुनि और सभासद कहने लगे : "सचमुच कितने विवेकपूर्ण वचन हैं श्रीरामचन्द्रजी के !"

वशिष्ठजी ने विश्वामित्रजी से कहा : "मुनिवर ! श्रीरामचन्द्रजी को आत्मज्ञान का उपदेश दीजिये ताकि उन्हें अभीष्ट पद प्राप्त हो ।"

तत्पश्चात् रामचन्द्रजी सभा में बुलाये गये । उन्होंने जगत की नश्वरता का जो वर्णन किया वह श्री योगवाशिष्ठ महारामायण के वैराग्य प्रकरण में वर्णित है।

दूसरा कोई पूरा ग्रन्थ आप न पढ़ सकें तो 'योग वाशिष्ठ' का वैराग्य प्रकरण ही पढ़ लेना ताकि पुनरावृत्ति किस तरह से होती है यह समझ में आ जाएगा । आपके हृदय के द्वार खुलने लगेंगे । यह विचार उदित होगा कि हम क्या कर रहे हैं ?

वैसे तो 'योगवाशिष्ठ' में छः प्रकरण हैं – वैराग्य प्रकरण, मुमुक्षु प्रकरण, उत्पत्ति प्रकरण, स्थिति प्रकरण, उपशम प्रकरण और निर्वाण प्रकरण । इन प्रकरणों में आप जीवन्मुक्त स्थिति तक पहुँच सको, ऐसा सुंदर वर्णन है ।

जो मनुष्य एक बार 'योगवाशिष्ठ' का पाठ करता है, उसका चित्त शान्त होने लगता है । फिर चित्त किधर जाता है इसे देखा जाय तो तुम्हारे संकल्प विकल्पों में सहजता से कमी होने लगती है । तुम्हारी आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होकर तुम्हारे ऐहिक और सांसारिक कार्य तो आसानी से होने लगेंगे ही, परन्तु जगत के कार्यों में तुम्हें जो सफलता मिलेगी उसका तुम्हें अहम् न होगा और न ही उसमें आसक्ति होगी तथा न कभी वस्तुओं का चिन्तन करते–करते मृत्यु होगी बल्कि तुम्हारे स्वरूप का चिन्तन करते–करते देह की मृत्यु होगी और तुम देह की मृत्यु के दृष्टा बनोगे ।

जो अपनी मृत्यु को देखता है उसकी मृत्यु होती ही नहीं, यह पाठ तुम्हें पढ़ाने के लिये मैं तुम्हें सावधान कर रहा हूँ ।

सुकरात को जहर देने का आदेश दिया गया । जहर बनाने वाला जहर पीस रहा है, लेकिन सुकरात निश्चिंत होकर अपने मित्रों के साथ बातचीत कर रहे हैं । पाँच बजते ही जहर पीना है और सुकरात दो मिनट पहले ही जहर देने वाले से कहते हैं : "भाई ! समय पूरा हो गया है, तुम क्यों देर कर रहे हो ?" तब मित्रगण और उपस्थित लोग कहते हैं : "आप भी अजीब इन्सान हैं! हम तो चाहते हैं कि आप जैसे महापुरुष दो साँस और ले लें । इसलिए हम जानबुझकर थोड़ी देर कर रहे हैं ।"

सुकरात कहते हैं : "तुम जानबुझकर देर करते हो लेकिन दो मिनट अधिक मैं जी भी लिया तो कौन–सी बड़ी बात हो गई ? मैंने तो जीवन जी कर देख लिया, अब मृत्यु को देखना है । मैं मरने वाला नहीं हूँ । "

"तुम जानबुझकर देर करते हो लेकिन दो मिनट अधिक मैं जी भी लिया तो कौन–सी बड़ी बात हो गई ? मैंने तो जीवन जी कर देख लिया, अब मृत्यु को देखना है ! मैं मरने वाला नहीं हूँ।"

जहर का प्याला आया... मित्र और साथी रोने लगे तो वे महापुरुष समझाते हैं : "अब रोने का समय नहीं, समझने का समय है । यह जहर शरीर पर प्रभाव करेगा लेकिन मुझ पर इसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ेगा ।"

सुकरात पानी की तरह जहर पी गये । तत्पश्चात् वे लेटकर अपने मित्रों से कहते हैं :

"जहर का असर अब पैरों से शुरू हुआ है ... अब जांघ तक आ चुका है.... अब कमर तक उसका असर आ रहा है... रक्तवाहिनियों ने काम करना बन्द कर दिया है ... अब हृदय तक आ पहुँचा है ... अब मृत्यु यहाँ तक आ गई है लेकिन मृत्यु इस शरीर को मारती है... मृत्यु जिसको मारती है उसे मैं ठीक तरह से देख रहा हूँ ।

जो अपनी मृत्यु को देखता है उसकी मृत्यु होती ही नहीं, यह पाठ तुम्हें पढ़ाने के लिये मैं तुम्हें सावधान कर रहा हूँ ।"

इसी प्रकार अपने जीवन में भी एक दिन ऐसा आयेगा । मौत से घबराने की जरूरत नहीं है... डरने की जरूरत नहीं है । मौत किसकी होती है ? किस तरह होती है ? उस समय सावधान होकर जो यह निहारता है, जो मृत्यु को देखता है वह मौत से परे अमर आत्मा को जानकर मुक्त हो जाता है ।

बिल्ली को देखकर दाने चुगता कबूतर आँखें बन्द कर लेता है, लेकिन ऐसा करने से बिल्ली छोड़ नहीं देती । ऐसे ही जो दुःख, विघ्न या मौत से लापरवाही बरतेगा उसे मौत छोड़ेगी नहीं । मौत का साक्षी होकर मौत से परे अपने अमर आत्मा में जो जाग जाता है वह धन्य हो जाता है ।

❀

जीव–शिव के बीच की दीवार क्या है ?

साधु वासवाणी के पास एक कर्नल आया और बोला :

"बाबा लोग दया करें तो भगवान की मुलाकात हो सकती है । आप जो भी बोलो, मैं करने को तैयार हूँ । आज मुझे भगवान के दर्शन कराओ ।"

साधु वासवाणी बोले : "हमारा मन, आँख, नाक, कान सब उसी परमात्मा की सत्ता से चेतनवान दिखते हैं । बाहर के मंदिर, मस्जिद या गिरजाघर खड़े हुए हैं लेकिन पहले यहाँ भीतर है बाद में उसीकी सत्ता से बाहर खड़े हुए हैं । सदा साथ में जो है और जो मंदिरों को भी बनानेवाला है, भगवान की स्थापना करनेवाला जो भगवान है, खुदा की याद का पत्थर लगानेवाला जो है, वह असली खुदा है ।"

कर्नल बोला : "आप बोलो तो मैं अपना फंड आप के नाम पर कर दूँ । मेरी जमीन है वह भी आपको दे दूँ । तन–मन–धन आपको अर्पण । लेकिन मुझे भगवान का दर्शन करा दो ।"

साधु वासवाणी बोले : "छोड़ो भाई ! तन–मन–धन अर्पण करने की बात एक है और समर्पित हो जाना दूसरी बात है ।"

कर्नल बोला : "नहीं बाबाजी ! आप जो भी कहेंगे मैं करने को तैयार हूँ । तन एक बार जल जायेगा, मन चौरासी लाख बार भटकाता रहा है, धन तो छोड़कर मरना है । जो छोड़ना है और जिसे जलाना है वह देकर अगर भगवान का दर्शन हो जाय तो सौदा सस्ता है । गुरुजी ! मैं आपके नाम पर यह सब लिख देता हूँ ।"

गुरुजी बोले : "मेरी एक छोटी–सी आज्ञा मानो तो भगवान के दर्शन हो जायेंगे ।"

कर्नल बोला : "बाबाजी ! मंजूर है ।"

गुरुजी बोले :"पलटेगा तो नहीं न ?"

कर्नल ने सोचा कि बाबाजी पुत्र, परिवार, पत्नी माँगेंगे, वह तो मैं दे दूँगा ।

कर्नल बोला : "नहीं पलटूँगा..."

गुरुजी बोले : "छोड़ो, जाने दो । जाओ, अपनी ऑफिस संभालो । "

कर्नल ने आग्रह जारी रखा तो गुरुजी बोले :

"मुझे तुम्हारी जमीन, फंड या सम्पत्ति कुछ भी नहीं चाहिए । यह सब तो हम तुच्छ समझकर छोड़कर फिर बाबा बने हैं । ये हमको नहीं चाहिये । तुम बाल–बच्चों को अपने पास रखो, हमें चाकर नहीं चाहिए । हम स्वयं स्वतंत्र हैं तो दूसरों को क्यों परतंत्र बनायें ? लेकिन एक आज्ञा मानो । तुम्हारे और ईश्वर के बीच जो अड़चन है उस अड़चन को हटा दो ।"

"ऐसा करो । यह ड्रेस उतार दो और लंगोटी पहन लो । बाल कटवाकर मुंडन कराके ऑफिस में जाकर काम करो ।"

कर्नल बोला : "आज्ञा करो ।"

बाबा : "ऐसा करो । यह ड्रेस उतार दो और लंगोटी पहन लो । बाल कटवाकर मुंडन कराके ऑफिस में जाकर काम करो ।"

"बाबाजी ! लोग क्या कहेंगे ?"

बाबा बोले : "बस तो फिर......"

इश्क करना जाँ बचाना
यह भी कोई हो सकता है ?
आशिके दिले दर्द हो वो भी
कोई सुख से सो सकता है ?

(अनुसंधान पेज २२ ऊपर...)

(पेज १९ से जारी...)

ईश्वर से तो मुहब्बत करना है और अपना अहं भी संभाले रखना है ? 'लोग क्या कहेंगे ' इसकी परवाह मत करो । आवश्यकताएँ कम करो । कम आवश्यकता में आप बादशाह बन जाओगे । जो बचा हुआ समय है वह ईश्वर में लगा दो तो महान बन जाओगे । ॐ... ॐ.... ॐ....

'इतना तो चाहिए । इतने कपड़े तो चाहिए...' अरे एक कौपीन में महापुरुष लोग जी लेते थे यह बात भूल गये ? शुकदेवजी को कभी कौपीन का भी ठिकाना नहीं रहता था । कभी खुल जाती थी, पड़े रहते थे अपनी मस्ती में । लोगों ने पागल कहा । अभी वे ही लोग मस्तक जुकाते हैं । जिन्होंने आवश्यकताएँ बढ़ाई वे रावण की तरह बरबाद हो गये ।

क्या करिये क्या जोड़िये
थोड़े जीवन काज ।
छोड़ी छोड़ी सब जात हैं
देह गेह धन राज ।।

हर आदमी एक पावरहाऊस है । हर आदमी से अपने विचार के आंदोलन फैलते हैं । भूमि में तमाम प्रकार का रस छुपा है । इन बाह्य आँखों से वह नहीं दिखता । एक ही नहर का पानी और एक ही जमीन लेकिन जैसा बीज होता है वैसा सर्जन होता है । जैसे गन्ना, बाजरी, गेहूँ इत्यादि । ऐसे ही हममें भी अनंत-अनंत रस भरा है, अनंत-अनंत क्षमताएँ भरी हैं । हमको जैसा बाहर से वातावरण मिलता है, उसी प्रकार की अंदर सिंचाई होती है । आपके पास बाह्य जगत का कितना ज्ञान या धन है यह मूल्यवान नहीं है । परमात्मा यह पूछता है कि आप क्या चाहते हैं ? आप को किस चीज की प्यास है ? किसको चाहते हो, नश्वर को या शाश्वत को ? अहं को विकसित करना चाहते हो, या विसर्जित करना चाहते हो ? जन्म-मरण की यात्रा का अंत करना चाहते हो या जन्म-मरण का सामान बढ़ाना चाहते हो ? आपके पास क्या है इसका मूल्य नहीं है लेकिन आप क्या हैं इसका मूल्य है । आप जिज्ञासु हैं, भक्त हैं, साधक हैं कि फिर संसार के मजदूर हैं ? सब इकट्ठा किया, बनाया, कुटुम्बियों मित्रों को खुश रखा । मौत का झटका आया, सब चला गया । ये हैं संसार के मजदूर । आप संसार के मजदूर हो या संसार को साधन बनाकर उपयोग करते हुए अपनी यात्रा तय करनेवाले पथिक हो ? आपमें भगवान को पानेवाली तड़प है ? गुरुमुख होकर मान-पान चाहते हो ? संसार के मजदूर से जिज्ञासु बहुत ऊँचा होता है ।

आपके पास क्या है इसका मूल्य नहीं है लेकिन आप क्या हैं इसका मूल्य है। आप जिज्ञासु हैं, भक्त हैं, साधक हैं कि फिर संसार के मजदूर हैं ?

संतों के संग का रंग लगता है हम लोगों को । वालिये लुटेरे को नारदजी मिल गये तो वह वाल्मीकि ऋषि बन गया । सदना कसाई, रोहीदास चमार जैसे भी आज शास्त्रों में उल्लेखनीय स्थान पर हैं । रावण ने सोने की लंका बनाई परंतु एक तोला भी सोना रावण अपने साथ ले नहीं गया ।

कबीरजी कहते हैं :

क्या करिये क्या जोड़िये
थोड़े जीवन काज ।
छोड़ी छोड़ी सब जात हैं
देह गेह धन राज ।।
हाड बढ़ा हरि भजन कर
द्रव्य बढ़ा कछु देय ।
अकल बढ़ी उपकार कर
जीवन का फल एह ।।

शरीर को, धन को, राज्य को सब छोड़ छोड़ कर जा रहे हैं । सब चलाचली का मेला है ।

छूटनेवाले, मरनेवाले शरीर से अमर आत्मा की यात्रा कर लो । शरीर खाक में मिले उसके पहले अपने

पापों को खाक में मिला दो । अपने हाथ की बात है । कुटुंबी अर्थी में बाँधकर स्मशान में जला दें उसके पहले ही अपनी समझ से अपने आपको भगवान के चरणों में सौंप दो । आँखों की रोशनी कम होने लगे उसके पहले भीतर की आँख खोल दो । बेड़ा पार हो जायेगा । बहुएँ मुँह मोड़ लें उसके पहले अभी से मुँह मोड़ लो तो बुढ़ापे में पश्चात्ताप नहीं होगा ।

चाहे हरि भजन कर चाहे विषय कमाय ।

चाहो तो परमात्मा का भजन कर मुक्त हो जाओ, अपने २१ कुंल का उद्धार करो और चाहो तो फिर हाय–हाय करके जगत की चीजें संभालो, बटोरो और अंत में मृत्यु का झटका लगते ही छोड़ दो । नौकरी–धंधा करने की मना नहीं है । यह सब करके अपनी आवश्यकता पूरी करो । इच्छाएँ पूरी करने में मत लगो । आवश्यकता है श्वास लेने की, बिना परिश्रम के पूरी होती है । पानी और भोजन की आवश्यकता भी थोड़े परिश्रम से पूरी हो जाती है लेकिन इच्छाएँ बढ़ जाती हैं तो बन्धन होता है । जिस शरीर को जलाना है उसीको लाड़ लड़ाते रहते हैं और जो लाड़ लड़ाते हैं उन्हींकी हम नकल करते हैं । जिन्होंने शरीर का सदुपयोग किया उनकी नकल की जाय तो हमारा कल्याण हो जाय । शुकदेवजी, बुद्ध, महावीर, कबीरजी, संत तुकाराम, एकनाथजी महाराज, ज्ञानेश्वर महाराज, मीराबाई, स्वयंप्रभा, सुलभा, सांई कंवरराम आदि की ऊँचाई को देखकर हम अपना स्वभाव बनायें तो आसानी से हम मुक्त हो सकते हैं ।

गुरु कृपा

है समर्पित उस देव को जिसने इशारा दे दिया ।
नाम आशाराम है अशोक मुझको बना दिया ॥
कौन साधन है सही, इस भाव में पडते थे हम ।
सब झमेले दूर कर अन्तर ज्ञान हमको दे दिया ॥
है नहीं भाषा ललित और न मुझको ज्ञान ही ।
पर भाव मुझमें आ रहे हैं त्याग के उस तेज से ॥
जो कहीं संसार है, उससे विनय मेरी यही ।
प्रेम से बहता रहे और भावना टूटे नहीं ॥
है समर्पित उस देव को जिसने इशारा दे दिया ।
नाम आशाराम है अशोक मुझको बना दिया ॥

– अशोक रघुवंशी

भगवन्नाम की महिमा

उड़िया बाबा, हरि बाबा, हाथी बाबा और आनंदमयी माँ परस्पर मित्र संत थे । एक बार कोई आदमी उनके पास आया और बोला :

"बाबाजी ! भगवान का नाम लेने से क्या फायदा होता है ?"

तब हाथी बाबा ने उड़िया बाबा से कहा :

"यह तो कोई वैश्य लगता है, बड़ा स्वार्थी आदमी है । भगवान का नाम लेने से क्या फायदा ? बस, फायदा ही फायदा सोचते हो ! भगवन्नाम जब स्नेह से लिया जाता है तब 'क्या फायदा ? कितना फायदा ?' इसका बयान करने वाला कोई वक्ता ही पैदा नहीं हुआ । भगवन्नाम से क्या लाभ होता है, उसका बयान कोई नहीं कर सकता । सब बयान करते–करते छोड़ गये लेकिन बयान पूरा नहीं हुआ ।"

भगवन्नाम–महिमा का बयान नहीं किया जा सकता । तभी तो कहते हैं :

राम न सके नाम गुन गाई ।

स्वयं राम भी राम नाम की महिमा का बयान नहीं कर सकते तो औरों की तो बात ही क्या है ? नाम की महिमा क्या है ? मंत्रजाप की महिमा क्या है ? भगवान जब खुद ही इसकी महिमा नहीं गा सकते तो दूसरों की बात ही क्या है ? 'मंत्र जाप मम दृढ़ विश्वासा । पंचम

सत्संग की महिमा.... पापी को पुण्यात्मा बना देती है, पुण्यात्मा को धर्मात्मा बना देती है, धर्मात्मा को महात्मा बना देती है, महात्मा को परमात्मा बना देती है और परमात्मा को... आगे वाणी जा नहीं सकती ।

स्वयं राम भी राम नाम की महिमा का बयान नहीं कर सकते तो औरों की तो बात ही क्या है ? नाम की महिमा क्या है ?

भक्ति यह वेद प्रकासा' ऐसा तो कह दिया, लेकिन मंत्रजाप की महिमा का वर्णन पूरा नहीं हो सकता ।

कमाल की एक कथा है :

एक बार रामनाम के प्रभाव से कबीर–पुत्र कमाल द्वारा एक कोढ़ी का कोढ़ दूर हो गया । कमाल समझते हैं कि रामनाम की महिमा मैं जानता हूँ, किन्तु कबीरजी प्रसन्न नहीं हुए । उन्होंने कमाल को तुलसीदासजी के पास भेजा ।

तुलसीदासजी ने एक तुलसी के पत्र पर रामनाम लिखकर वह जल में डाला और उस जल से पाँच सौ कोढ़ियों को ठीक कर दिया । कमाल समझ गये कि एक बार रामनाम लिखकर उस तुलसीपत्र के जल से पाँच सौ कोढ़ियों को ठीक किया जा सकता है, रामनाम की इतनी महिमा है । किन्तु कबीरजी इससे भी संतुष्ट न हुए और उन्होंने कमाल को भेजा सुरदासजी के पास ।

सुरदासजी ने गंगा में बहते हुए एक शव के कान में 'राम' शब्द का केवल 'र' कार कहा और शव जीवित हो गया । तब कमाल ने सोचा कि 'राम' शब्द के 'र' कार से मुर्दा जीवित हो सकता है यह 'राम' शब्द की महिमा है ।

तब कबीरजी ने कहा :

"यह भी नहीं । इतनी–सी महिमा नहीं है 'राम' शब्द की ।

भृकुटि विलास सृष्टि लय होवई ।

जिसके भृकुटिविलास मात्र से सृष्टि का प्रलय हो सकता है, उसके नाम की महिमा का वर्णन तुम क्या कर सकोगे ?

अजब राज है मुहब्बत के फसाने का ।
जिसको जितना आता है,
गाये चला जाता है ।

पूरा बयान कोई नहीं कर सकता । भगवन्नाम की महिमा का बयान नहीं किया जा सकता । जितना करते हैं उतना थोड़ा ही पड़ता है ।

भगवन्नाम एवं सत्संग के प्रभाव से वालिया लुटेरा वाल्मीकि ऋषि बन गया । वालिया को देवर्षि नारद का सत्संग मिला और भगवन्नाम, वह भी उल्टा 'मरा' का जप किया जिसने उसे महाकवि, आदिकवि वाल्मीकि बना दिया । लेकिन सत्संग एवं भगवन्नाम का इतना ही लाभ नहीं है ।

जितना–जितना तुम्हारा हृदय निःस्वार्थ होता है उतनी ही भौतिक उन्नति होती है और जितना तुम्हारा हृदय ईश्वर को प्रेम करता है उतनी उतनी आध्यात्मिक उन्नति होती है ।

नारदजी दासीपुत्र थे, विद्याहीन, जातिहीन और बलहीन । दासी भी ऐसी साधारण दासी कि चाहे कहीं भी काम में लगा दो, किसी घर पर काम में रख दो ।

एक बार उस दासी को साधुओं की सेवा में लगा दिया गया । वहाँ वह अपने पुत्र को साथ ले जाती थी और वही पुत्र साधुसंग एवं भगवन्नाम के जप के प्रभाव से आगे चलकर देवर्षि नारद बन गये । यह सत्संग की महिमा है, भगवन्नाम की महिमा है । लेकिन इतनी ही महिमा नहीं है ।

सत्संग की महिमा, दासीपुत्र देवर्षि नारद बने इतनी ही नहीं, कीड़े में से मैत्रेय ऋषि बन गये इतनी ही नहीं, वालिया लुटेरा वाल्मीकि ऋषि बन गये इतनी ही नहीं,

अरे ! जीव से ब्रह्म बन जाये इतनी भी नहीं, सत्संग की महिमा तो लाबयान है । जीव में से ब्रह्म बन गये फिर क्या ? फिर भी सनकादि ऋषि सत्संग करते हैं । एक वक्ता बनते, तो बाकी के तीन श्रोता बनते । शिवजी पार्वती को सत्संग सुनाते हैं और शिवजी स्वयं अगस्त्य ऋषि के आश्रम में सत्संग सुनने के लिये जाते हैं ।

सत्संग की महिमा.... पापी को पुण्यात्मा बना देती है, पुण्यात्मा को धर्मात्मा बना देती है, धर्मात्मा को महात्मा बना देती है, महात्मा को परमात्मा बना देती है और परमात्मा को... आगे वाणी जा नहीं सकती ।

में संतन के पीछे जाऊँ,
जहाँ जहाँ संत सिधारे ।

क्या कंस को मारने के लिए हरि को अवतार लेना पड़ता है ? वह तो 'हृदयाघात' से भी मर सकता था । क्या रावण को मारने के लिए अवतार लिया होगा रामचंद्रजी ने ? राक्षस तो अंदर ही अंदर लड़कर मर सकते थे । लेकिन इस बहाने सत्संग का प्रचार-प्रसार होगा, इस बहाने ऋषि-सान्निध्य मिलेगा, सत्संग का प्रसाद प्यारे भक्तों के समाज तक पहुँचेगा ।

तो परब्रह्म परमात्मा का कोई भी पूरा बयान नहीं कर सकता क्योंकि बयान बुद्धि से किया जाता है, बुद्धि प्रकृति की है और प्रकृति तो परमात्मा के एक अंश में है । परमात्मा के एक अंश में प्रकृति है और प्रकृति में ये तमाम जीव और जीवों में जरा-सी बुद्धि, वह बुद्धि क्या वर्णन करेगी परमात्मा का ?

सच्चिदानंदघन परमात्मा का पूरा बयान नहीं किया जा सकता । वेद कहते हैं 'नेति नेति नेति ....' पृथ्वी नहीं, जल नहीं, तेज नहीं, नेति...नेति..., वायु नहीं, आकाश भी नहीं, इससे भी परे । जो कुछ हम बने हैं शरीर से, वह शरीर तो इन पाँच भूतों का है । पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पाँच भूतों से ही तो इस सचराचर सृष्टि का निर्माण हुआ है। मनुष्य, प्राणी, भूत-जात सब इसीमें तो हैं । वह सत्य तो इससे परे है अतः उसका बयान कैसे हो ?

उसका पूरा बयान नहीं होता है और बयान करने जब जाती हैं बुद्धियाँ तो जितनी जितनी बयान करने जाती हैं उतनी-उतनी उसमय हो जाती हैं, अगर पूरा बयान किया तो फिर वह बुद्धि, प्रकृति की बुद्धि नहीं बचती, बुद्धि परमात्मारूप हो जाती है । जैसे लोहा अग्नि के निकट जाये, कोयले उठाये तब तक तो ठीक है लेकिन अग्नि में रख दो उसको, तो लोहा अग्निमय हो जायेगा । ऐसे ही परमात्मा का बयान करते-करते बयान करनेवाला स्वयं परमात्मामय हो जाता है ।

❀

सच्चे सुख की ओर

मनुष्य को कभी भी अपने स्वार्थ में आबद्ध नहीं होना चाहिए । व्यावहारिक वासनाओं को पोसने का स्वार्थ व्यक्ति की शक्तियों को कुंठित कर देता है । जो सुख का अभिलाषी है वह सच्ची सेवा नहीं कर सकता । जो संसारी वासनाओं का गुलाम है वह अपना ठीक से विकास नहीं कर सकता । जो अपने स्वार्थ का गुलाम है वह अपना कल्याण नहीं कर सकता ।

जितना-जितना तुम्हारा हृदय निःस्वार्थ होता है उतनी ही भौतिक उन्नति होती है और जितना तुम्हारा हृदय ईश्वर को प्रेम करता है उतनी उतनी आध्यात्मिक उन्नति होती है । जितना व्यापारी अधिक स्वार्थी होता है उतना ही ग्राहक उससे भागते हैं एवं जितना व्यापार में निःस्वार्थता का अंश होता है उतने ही ग्राहक उसके अपने हो जाते हैं । जितना ही कथाकार के हृदय में स्वार्थ होता है उतना ही कथा करानेवाले, सत्संग सुनने वाले व्यक्तियों की सीमा कुंठित होती है और जितनी सत्संग करने वाले व्यक्ति के हृदय में

स्वार्थ से अपनी सेवाओं को तुच्छ मत करो और वासनाओं से अपने जीवन को नष्ट मत करो ।

निःस्वार्थता होती है उतना ही बड़ा समुदाय उसके चरणों में लोटपोट होने लगता है ।

निःस्वार्थता के बिना विकास संभव नहीं और प्रेम के बिना प्रभु का अनुभव संभव नहीं । निःस्वार्थता और प्रेम ये दो चीजें आ जायें।

स्वार्थ से अपनी सेवाओं को तुच्छ मत करो और वासनाओं से अपने जीवन को नष्ट मत करो । करोड़ों जन्मों से मार खाते आये हो और अभी भी हजारों बार अनुभव किया कि बाहर के सुख के पीछे अपने को ढकेलते तो हैं किन्तु घड़ी भर में ही सुख और योग्यता एक साथ नष्ट हो जाते हैं । इसलिए सुख की लालच के लिए की गयी प्रवृत्ति नहीं, किन्तु सुख बाँटने की भावना से की गयी प्रवृत्ति आध्यात्मिक विकास का मूल है ।

जो सुख लेने के लिए शादी करते हैं वे पति-पत्नी एक दूसरे के लिए शत्रु हो जाते हैं । ऋषिऋण चुकाने के लिए शादी की, संयम से शादी का उपयोग किया और पति-पत्नी के अंदर छुपे हुए परमात्मा के प्रागट्य के लिए एक दूसरे को गिरिजाबाई और एकनाथ की तरह सहयोग दिया, कबीर और लोई माता की तरह एक दूसरे को सहयोग दिया, तभी तो कहीं कमाल और कमाली आ सकते हैं । नहीं तो शराब, कबाब और मुर्गियाँ खाकर मुर्गीछाप बच्चों को जन्म देते हैं । अपने को, समाज को और देश को परेशान करते हैं । अपना शरीर एवं उसके विकार भी अपने को परेशान करते हैं ।

मनुष्य विकारों का गुलाम हो गया है । कितनी मनुष्य की दुर्दशा है ! मनुष्य के बच्चे का कितना अपमान ! मनुष्य अपना संयम भूलता गया, सुख की दासता में सुखस्वरूप हरि को भूलता गया । सच्चे सुख को भूलकर विकारी सुख में अपने को ढकेलता गया । ज्यों-ज्यों विषय-वासना की गति तीव्र होगी त्यों-त्यों स्वार्थ बढ़ेगा और ज्यों-ज्यों स्वार्थ बढ़ेगा त्यों-त्यों संसार में संघर्ष बढ़ेगा । ज्यों-ज्यों विषय वासनाएँ उत्तेजित करने वाले चलचित्र बढ़ेंगे त्यों-त्यों देश, जाति समाज और संसार का विनाश होगा और ज्यों-ज्यों संयम का, सदाचार का प्रचार होगा, अंतर-सुख लेने का प्रचार होगा त्यों-त्यों व्यक्ति, देश, जाति और समाज का कल्याण होगा ।

सुख की दासता सत्य स्वरूप सुख से दूर रखती है, किन्तु सुख लेने की चीज नहीं है, वह बात दिमाग में बैठ जानी चाहिए । श्रीरामजी के सेवक हनुमानजी इतने कैसे चमक गये ? वाहवाही की इच्छा नहीं, सेवा करना ही उनका स्वभाव है । बिना सेवा के हनुमानजी रह नहीं सकते । राम, लक्ष्मण एवं जानकीजी का तो नाम आता है लेकिन जय हनुमानजी की बोलते हैं ।

राम लक्ष्मण जानकी,
जय बोलो हनुमान की ।

जो अपनी वाहवाही छोड़कर, निःस्वार्थ कर्म करता है उसकी भौतिक उन्नति, बौद्धिक उन्नति एवं आध्यात्मिक उन्नति, सब उन्नतियाँ एक साथ होने लगती हैं ।

ईश्वर की कृपा को स्वीकार करने से मनुष्य सच्चे सुख को प्राप्त कर सकता है किन्तु सत्ता, धन, सौन्दर्य आदि के आकर्षण के कारण उसकी मति इतनी तो आक्रान्त हो जाती है कि वह ईश्वर की सत्ता का भी अस्वीकार कर देता

ज्यों-ज्यों विषयवासना की गति तीव्र होगी त्यों-त्यों स्वार्थ बढ़ेगा और ज्यों-ज्यों स्वार्थ बढ़ेगा त्यों-त्यों संसार में संघर्ष बढ़ेगा । ज्यों-ज्यों विषय वासनाएँ उत्तेजित करने वाले चलचित्र बढ़ेंगे त्यों-त्यों देश, जाति, समाज और संसार का विनाश होगा और ज्यों-ज्यों संयम का, सदाचार का प्रचार होगा, अंतर-सुख लेने का प्रचार होगा त्यों-त्यों व्यक्ति, देश, जाति और समाज का कल्याण होगा ।

है और कहता है कि 'भगवान होते तो संसारी इतने दुःखी क्यों ?'

अरे बेवकूफनंदन ! भगवान हैं इसीलिए तू बोल सकता है कि 'संसारी दुःखी क्यों ?' अन्यथा तू यह बोलने को भी नहीं रहता इतना दुःखी, आक्रान्त होता । दुःख भगवान के कारण नहीं, दुःख तेरी वासना, स्वार्थ और अज्ञानता के कारण बना है ।

जिसने वासना, स्वार्थ और अज्ञानता को, जितने अंशों में मिटाया है उतना ही उसने भगवान का प्रसाद पाया है । किन्तु संसारी सुख और साधनों को पकड़ने की जो आशा है उससे परमात्मा को पकड़ने की योग्यता नष्ट हो गयी । अभी भी संसारी, विकारी सुखों से जितना-जितना अपने को बचायेंगे उतना-उतना आत्मिक सुख मिलेगा ।

जिसका जी चाहे...

गुरु की मूर्ति मन में बिठा लो ।
जिसका जी चाहे ॥
अपने भाग्य को बना लो ।
जिसका जी चाहे ॥
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु गुरु महादेव देवन के ।
यही निश्चय सदा मन में बिठा लो ।
जिसका जी चाहे ॥
धनुष तोड़ा श्री राम ने तब गुरु ध्यान को धारा ।
पवनसुत की तरह पर्वत उठा लो ।
जिसका जी चाहे ॥
गुरु कृपा से नारद की चौरासी कट गयी पल में ।
जनक शुकदेव की पदवी को पा लो ।
जिसका जी चाहे ॥
गुरुपूजा किये जाओ 'मौला' प्रेम से निसदिन ।
श्रीचरणों में दो आँसू बहा लो ।
जिसका जी चाहे ॥
गुरु की मूर्ति मन में बिठा लो ।
जिसका जी चाहे ॥
अपनी बिगड़ी बना लो ।
जिसका जी चाहे ॥

शहद : पृथ्वी का अमृत

शहद अदरक रस मिलाकर,
चाटे परम चतुर ।
श्वास, सर्दी, वेदना,
निश्चित होए दूर ॥

शहद प्रकृति की देन है । भारत में प्राचीन काल से शहद एक उत्तम खाद्य माना जाता है । उसके सेवन से मनुष्य नीरोगी, बलवान और दीर्घायु बनता है । विविध प्रकार के फूलों में से मीठा रस चूसकर मधुमक्खियाँ अपने शरीर में संचित करती हैं । यह रस पहले तो पतला और फीका होता है । परंतु मधुमक्खियों के शरीर में संचित होने से गाढ़ा और मीठा होता है । फिर शहद के छत्ते में ज्यादा गाढ़ा बनकर शहद के रूप में तैयार होता है । छत्ते में मधुमक्खियाँ उसे मोम द्वारा सुरक्षित रखती हैं । इस प्रकार शहद, अलग-अलग फूलों का पराग, वनस्पतियाँ और मधुमक्खियों के जीवन का सम्मिश्रण या सार तत्त्व है । शहद केवल औषधि ही नहीं, परंतु दूध की तरह मधुर और पौष्टिक संपूर्ण आहार भी है ।

शहद में स्थित लौह तत्त्व और क्षार खून को प्रति अम्ली बनाता है । वह रक्त के लालकणों में वृद्धि करके रक्त का फीकापन दूर करता है । शहद गरमी और शक्ति प्रदान करता है । शहद श्वास, हिचकी, वगैरह श्वसनतंत्र के रोगों में हितकर है । शहद में विटामिन 'बी' का प्रमाण ज्यादा होता है जिससे उसका सेवन करने से दाह,

खुजली, फुँसियाँ जैसे त्वचा के सामान्य रोगों की शिकायत नहीं रहती । शहद जिस औषधि के साथ मिलाया जाता है उस औषधि का गुण बढ़ता है ।

शहद उष्णता नहीं सह सकता । उसे गरम नहीं करना चाहिए, गरम चीजों के साथ नहीं मिलाना चाहिए या गरम चींजों के साथ नहीं खाना चाहिए । शहद खाने के बाद गरम पानी भी नहीं पिया जा सकता ।

शहद और घी एक साथ एक ही प्रमाण में (समान मात्रा में) लेने से विषतुल्य होता है । कफप्रधान दर्दों में घी की अपेक्षा शहद ज्यादा लेना चाहिए । पित्त एवं वातप्रधान दर्दों में शहद की अपेक्षा घी ज्यादा प्रमाण में लेना चाहिए ।

एक वर्ष के बाद शहद पुराना माना जाता है । शहद जैसे-जैसे पुराना होता है वैसे-वैसे गुणकारी बनता है । शहद की मात्रा २० से ३० ग्राम है । बालकों को २०-२५ ग्राम से और वयस्कों को ४०-५० ग्राम से ज्यादा शहद एक साथ नहीं लेना चाहिए । शहद का अजीर्ण अत्यंत हानिकारक है । शहद की विकृति या कुप्रभाव कच्ची धनिया और अनार खाने से मिटता है ।

एक चम्मच शहद, अरडूसी के पत्तों का रस एक चम्मच और आधी चम्मच अदरक का रस मिलाकर पीने से खाँसी मिटती है ।

शहद में मोर के पंखों की भस्म मिलाकर चाटने से हिचकी बंद होती है ।

शहद के साथ पानी मिलाकर उसके कुल्ले करने से बढ़े हुए टॉन्सील्स में बहुत राहत मिलती है ।

रोज सुबह २०-२० ग्राम शहद ठंडे पानी में मिलाकर चार पाँच महीने पीने से दाह, खुजली और फुंसियों जैसे त्वचा के रोग मूल में से नष्ट हो जाते हैं ।

पतला साफ कपड़ा शहद में डुबाकर जले हुए भाग पर रखने से खूब राहत मिलती है ।

शहद की कसौटी कैसे करें ?

शहद में गिरी हुई मख्खी यदि उसमें से बाहर निकल आये और थोड़ी देर में उड़ सके तो जानना चाहिए की शहद शुद्ध है । शुद्ध शहद को कुत्ते नहीं खाते । शुद्ध शहद लगाये हुए खाद्य पदार्थ को कुत्ते छोड़ देते हैं । शुद्ध शहद की बूँद पानी में डालने से तले में बैठ जाती है । शहद में रूई की बाती डुबाकर दीपक जलाने से आवाज किये बिना जले तो शहद शुद्ध मानना चाहिए। बाजार में अमुक मार्क की (कंपनी की) पैक बॉटलें मिलती हैं उन्हें कृत्रिम शहद माना जा सकता है । चासनी के टेंकर को छः महीने तक जमीन में दबा कर रखा जाता है और उसमें से बनाया हुआ कृत्रिम शहद लेबोरेटरी में भी पास हो सकता है । दूसरे प्रकार से भी कृत्रिम शहद बनाया जाता है । आजकल ज्यादा प्रमाण में वैसा ही शहद मिलता है ।

❀

पादुका धारण करने के लाभ

चक्षुष्यं स्पर्शहितं पादयोर्व्यसनापहम् ।
पराक्रमसुखं वृष्यं नित्यं पादत्रधारणम् ।।

(चरक संहिता सूत्रस्थान : ५.९९)

पादत्र – अर्थात् पादुकाएँ आंखों के लिए हितकारी, स्पर्शेन्द्रियों के लिए हितकारी एवं दोनों पैर के व्यसन माने काँटे आदि का भय एवं पैर के रोगों का नाश करती हैं । वे बलवर्धक हैं, पराक्रम माने मानसिक बलवर्धक हैं, सुखकारक हैं और वीर्यवर्धक हैं ।

इसलिए पादुकाओं के बिना चलने से आँखों को नुकसान, बल का नाश, मानसिक बल का नाश और वीर्य को हानि होती है ।

❀

दंत-सुरक्षा

८० से ९० प्रतिशत बालक विशेष कर दाँत के रोगों से, उसमें भी दंतकृमि से पीड़ित होते हैं । बालकों के अलावा और लोगों में भी दाँत के रोग वर्तमान में विशेष रूप से देखने को मिलते हैं ।

१. खूब ठंडा पानी अथवा ठंडा पदार्थ खाकर गरम पानी अथवा गरम पदार्थ खाया जाय तो दाँत जल्दी गिरते हैं ।

२. अकेला ठंडा पानी और ठंडे पदार्थ तथा अकेले गरम पदार्थ तथा गरम पानी के सेवन से भी दाँत के रोग होते हैं । इससे ऐसे सेवन से बचना चाहिए ।

३. भोजन करने के बाद दाँत साफ करके कुल्ले करना चाहिए । अन्न के कण दाँत में फँस तो नहीं गये इसका ध्यान रखना चाहिए ।

४. महीने में एकाध बार रात्रि को सोने से पूर्व नमक एवं सरसों का तेल मिलाकर, उससे दाँत घिसकर, कुल्ले करके सो जाना चाहिए । ऐसा करने से वृद्धावस्था में भी दाँत मजबूत रहेंगे ।

५. सप्ताह में एक बार तिल का तेल दाँतों में घिसकर तिल के तेल के कुल्ले करने से भी दाँत वृद्धावस्था तक मजबूत रहेंगे ।

६. आईसक्रीम, बिस्कीट, चॉकलेट, ठंडा पानी, फ्रीज के ठंडे और बासी पदार्थ, चाय, कॉफी आदि के सेवन से बचने से भी दाँतों की सुरक्षा होती है । सुपारी जैसे अत्यंत कठोर पदार्थों से खास बचना चाहिए ।

❀

अग्निसार क्रिया

अग्नाशय को प्रभावित करनेवाली यह योग की प्राचीन क्रिया लुप्त हो गयी थी । घेरण्ड ऋषि पाचन प्रणालि को सक्रिय रखने के लिए यह क्रिया करते थे । इस क्रिया से अनेक लाभ साधक को बैठे-बैठे मिल जाते हैं ।

विधि : वज्रासन में बैठ कर हाथों को घुटनों पर रखें । सामने देखें । श्वास बाहर निकाल कर पेट को आगे पीछे चलायें । पेट को चलाते वक्त श्वास बाहर ही रोक रखें । जब आप पेट चलाते हैं तब कन्धों को न हिलायें । एक बार जब तक श्वास बाहर रोकी रहती है तब तक पेट चलाते रहें । एक बार श्वास छोड़ कर करीब २० से ४० बार पेट को अंदर बाहर करें, फिर पेट चलाना बंद करें और लंबी गहरी श्वास लेना छोड़ना शुरू करें । चार पाँच बार लंबी गहरी श्वास लेने छोड़ने के बाद फिर से श्वास बाहर छोड़ कर पेट को चलाने की इस क्रिया को ४-५ बार दोहरायें ।

लाभ : अग्निसार क्रिया से पाचन सुचारु रूप से चलता है । साधना में अधिक देर तक बैठने के बाद भी अजीर्ण नहीं होता और पेट के अनेक विकार दूर हो जाते हैं जैसे कब्ज (कोष्ठबद्धता) अल्सर, गैसेस, डकारें आदि की शिकायतें बंद हो जाती हैं । पेशाब में जलन कम हो जाती है । बार-बार पेशाब का आना या बहुमूत्र का होना इस क्रिया से बंद हो जाता है । भूख अच्छी लगती है । अधिक देर बैठकर साधना करनेवालों को अजीर्ण आदि नहीं होता है ।

'मूकं करोति वाचालं...'

मैं विजयनगर, लक्ष्मीपुरा, बड़ौदा में रहता हूँ । मेरी पत्नी को पू. बापू की कृपा से अद्‌भुत चमत्कार हुआ है ।

मेरी सासुजी गुरुपूर्णिमा के दिन बड़ौदा से पू. बापू के दर्शन करने अहमदाबाद आयी थीं । घर पर मेरी पत्नी दस साल से गूंगी हो गई थी । बोलती नहीं थी, घर के कार्य में ध्यान नहीं देती थी, स्नान भी नहीं करती थी, मेरे साथ लड़ती थी, मुझे मारती भी थी । मेरे भोजन

में पानी डाल देती थी । उसके दिमाग का कोई ठिकाना नहीं था । वह अपने बच्चों को भी पहचान नहीं सकती थी और उन्हें भी मारती थी ।

परन्तु जब मेरी सासुजी अहमदाबाद आयी तब उन्होंने बड़दादा की प्रदक्षिणा की और बड़दादा की मिट्टी लेकर मन में संकल्प किया कि मेरी बेटी यदि ठीक हो जायेगी और बोलेगी तो मैं उसे पू. बापू के दर्शन करने अहमदाबाद लाऊँगी । यह संकल्प उन्होंने अहमदाबाद में किया और घर पर मेरी पत्नी को चमत्कार हो गया। मेरी पत्नी अचानक 'हरि ॐ' बोलने लगी और जोर से बापू का नाम पुकारने लगी कि मुझे तो मेरे बापू ने अच्छी कर दी । रास्ते में जो मिलता था उसे 'हरि ॐ' कहती थी ।

हमने अहमदाबाद जाकर मनौती पूरी की । अब सपरिवार प्रत्येक शनिवार को विडियो सत्संग का लाभ लेते हैं और रविवार को प्रभातफेरी में भी जाते हैं ।

मेरे प्यारे गुरुदेव को हम हजार बार प्रणाम करते हैं ।

– गणपतसिंह ईश्वरसिंह
विजयनगर, गोरवा, बड़ौदा ।

पू. बापू की मंत्रदीक्षा का अद्‌भुत प्रभाव

शिविर में आने का निश्चित होते ही मेरा मन–मयूर नाचने लगा, जिसका वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं । भावनगर से रात्रि की बस में सुरत जाने के लिए निकले तब बस में ही सुबह सुबह भव्य स्वप्न आया और श्री सांईबाबा (शिरड़ीवाले) के दर्शन हुए।

हम सुरत पहुँचे और पूज्य गुरुदेव का सत्संग सुना। इतना आनंद आया कि जिसका वर्णन करना संभव नहीं है । सुबह सुबह रामकृष्ण परमहंस के दर्शन हुए । दूसरे दिन प्रातःकाल लगभग ३ से ४ बजे के बीच रमण महर्षि के दर्शन हुए । उसके बाद के दिन भी सुबह सुबह मेरे पूर्व के गुरुदेव पू. राम शर्मा (गायत्री के उपासक) के दर्शन हुए ।

हम पति–पत्नी दोनों ने साथ में ही मंत्रदीक्षा ली तब कोई जादुई चमत्कार हुआ और मेरा व्यक्तित्व ही कुछ अलग हो गया और हर प्रकार से मेरा विकास हुआ। शिविर पूरा करके जब वापस लौटे तब की मस्ती कुछ और ही थी ।

शिवालय में दर्शन करने जाऊँ तब पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू ही दिखें । ध्यान या पूजा में 'ॐ... ॐ.... ॐ....' की ध्वनि सुनाई दे । कभी कभी स्वप्न में पूज्य गुरुदेव श्री आसारामजी बापू दिखें । अब श्री आसारामजी बापू के पास से शक्तिपात साधना की दीक्षा लेने के बाद तो मानो अनुभवों का सागर लहराने लगा है । जो भी प्रश्न पूछूँ उसका उत्तर मिल जाता है और चाहे जैसे मुश्किल कार्य हों, परन्तु आसानी से हो जाते हैं ।

धन्य है इन योगेश्वर की आत्मयोग की दीक्षा ! सभी पुष्पों का सार होता है शहद वैसे ही सभी जपों का सार, मानो सद्‌गुरु श्री आसारामजी बापू आध्यात्मिक शहद का छत्ता न दे देते हों ! ऐसे मेरे जैसे तो हजारों गुरुभाई और बहनें हैं जिन्होंने पहले अलग अलग जगह साधनाएँ करके अंत में इन अलरव के औलिया का आश्रय लिया है । वाणी आगे जाती नहीं है । धन्य भागी हैं वे लोग, जिन्होंने आसारामजी बापू के दर्शन किये हैं, उनके पास से साधना की दीक्षा ली है उन मेरे तमाम गुरुभाइयों को मेरे हजार हजार वंदन....!

गुरुदीक्षा लेने के बाद मेरे जीवन में बहुत परिवर्तन आ गया है । पहले मैं कदम–कदम पर बहुत डरती थी। नौकरी में भी कोई ऐसा कहेगा, कोई वैसा कहेगा, धमकी देगा, ऐसा डर बात–बात में लगता था । परंतु पूज्यपाद गुरुदेव के पास से, सुरत में मंत्रदीक्षा लेने के बाद तो सिंह जैसा बल और हिम्मत आ गयी है ।

– चंद्रिका बहन
भावनगर

संस्था समाचार

स्थान–स्थान पर जन्मोत्सव मनाया गया...

गोधरा में

गोधरा (गुजरात) में स्थान–स्थान पर पू. बापू को कोटि कोटि वंदना करनेवाले बेनर्स लगाये गये थे और भव्य संकीर्तन नगरयात्रा का आयोजन लालबाग टेकरी के मैदान में किया गया था। गोधरा के तमाम राजमार्गों पर संकीर्तनयात्रा घूमी थी। हजारों की संख्या में भक्तजन संकीर्तन यात्रा में शरीक हुए थे। लोगों ने बारूद, नगाड़े, बेन्डबाजे आदि वाद्यों से तथा पुष्पवृष्टि करके एवं अबील गुलाल उड़ाकर स्थान–स्थान पर संकीर्तन यात्रा का स्वागत किया था एवं पूज्य बापू की आरती ऊतारी थी। छोटी कुमारिकाओं ने सिर पर कलश धारण करके भावपूर्वक आरती ऊतारी थी। नवरंग सोसायटी में डॉ. प्रभाकर भाटिया ने, धवल सोनी ने, सबजेल मैदान में श्री सी. के. पटेल, जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट ने भी आरती ऊतारी थी। पुलिस भी इस कार्यक्रम में शामिल हुई थी। स्थान–स्थान पर खूब–खूब प्रसाद बाँटा गया था। हजारों लोग अपने अहं को भूलकर हरिकीर्तन में सराबोर हुए थे। सभी ने अलौकिक आनन्द का अनुभव किया था।

विरमगाम में

विरमगाम (गुजरात) योग वेदान्त सेवा समिति के द्वारा पूज्य गुरुदेव के जन्म–महोत्सव के निमित्त विरमगाम में जलाराम अन्नक्षेत्र में साधु–संतों को भोजन तथा हॉस्पिटल में दर्दियों को फल आदि एवं स्कूलों में बच्चों को प्रसाद वितरण किया गया था। नगर में संकीर्तनयात्रा, छात्रालय एवं विद्यार्थी शिविरार्थियों के बटुक भोज एवं विडियो सत्संग का आयोजन किया गया था।

शाखपुर में

शाखपुर (तहसील लाठी, जि. अमरेली, गुजरात) में पूज्यश्री के जन्म–महोत्सव के पावन दिन पर छोटे बच्चों को प्रसाद–भोज दिया गया। सुबह छः बजे आरती, गुरुपूजा, गुरुवन्दना, धून आदि का कार्यक्रम रखा गया था। दोपहर को १२ बजे जन्मोत्सव मनाया गया। शाम छः बजे से सन्ध्या आरती, धून तथा प्रसाद–भोजन के कार्यक्रम रात्रि के १२ तक चलते रहे। यह दिन हम लोगों के लिए सचमुच बहुत ही आनन्द का दिन था। आबालवृद्ध, स्त्री–पुरुष सबके सब पू. गुरुदेव की प्यारी धून 'हरि ॐ' में तन्मय हो गये थे।

राजवाड़ा – इन्दौर में

संत श्री आसारामजी सत्संग मंडल, इन्दौर द्वारा राजवाड़ा में 'नशामुक्ति अभियान' का आयोजन दिनांक २ अप्रैल से ५ अप्रैल ९३ तक किया गया। इस अवसर पर 'नशे से सावधान' पुस्तक का वितरण व 'नशे के दुष्परिणाम' पर एक पोस्टर प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसे हजारों लोगों ने देखा व सराहा। यहाँ पर करीब ५५० लोगों ने नशा त्यागने व दूसरों को भी इस दलदल से निकालने का संकल्प किया।

नासिक में

श्री योग वेदान्त सेवा समिति, नासिक ने जो कार्य साल भर में किये हैं और नियमित चालू हैं उनकी सूचि :

साप्ताहिक सत्संग

(१) हर रविवार सुबह ७ से ९ तक (२) हर गुरुवार दोपहर ४ से ६ तक बहनों के लिए। (३) हर मंगलवार दोपहर १ से ३ तक डिश एन्टीना, केबल के ऊपर कैसेट दिखाते हैं जिसके कनेक्शन लगभग ६००० हैं।

प्रभातफेरी : इस साल प्रभातफेरी एवं संकीर्तनयात्रा आयोजन दो बार किया गया : (१) आत्म–साक्षात्कार दिन (२) जन्म–महोत्सव। प्रभातफेरी में सफेद वस्त्र पहन कर भजन कीर्तन करते आनंद और उत्साह में शहर की मुख्य सड़कों पर से यात्रा निकाली। १२ अप्रैल १९९३ को पूज्यश्री के जन्म–दिवस पर यहाँ के दो दैनिक पेपरवालों ने स्वामीजी का जीवन–चरित्र संक्षिप्त में छापा।

जन्म–महोत्सव कार्यक्रम

सुबह ५ से ८ बजे तक प्रभातफेरी। ८.३० से १० तक सत्संग भजन। सुबह ११ से १ तक विड़ियो सत्संग। दोपहर १२ बजे आनंद के साथ जन्म–महोत्सव मनाया। मक्खन मिश्री का प्रसाद बाँटा, गुब्बारे उड़ाये, फूलों की वर्षा की। प्रभातफेरी में 'जीवन झाँकी', 'योगयात्रा' और स्थानिय अखबार में छपा हुआ पूज्यश्री का संक्षिप्त जीवन–चरित्र बाँटा। आरती और प्रसाद होने के बाद २ से ३ महाप्रसाद का कार्यक्रम रखा था। जन्म–महोत्सव के उपलक्ष्य में अनाथ बच्चों को मिठाई बाँटी और गौशाला में घास भेजा।

पर्यटन :

समिति के लोगों ने ३ बार पर्यटन सत्संग आयोजित किये।

Registered with Registrar of Newspapers for India Under No. 48873/91

शक्तिपात वर्षा के द्वारा लाखों मायूस हृदयों को आह्लादित कर देनेवाले पूज्यश्री लक्ष्मणपुरा जैसे छोटे गाँव में उसी मस्ती के साथ सत्संग वर्षा करते हुए मधुर हास्य में ...

लक्ष्मणपुरा (गोरल, साबरकांठा, गुजरात) में गीता-भागवत सत्संग समारोह में पूज्यश्री की अमृतवाणी का रसपान करते हुए साधु-संत, भक्तजन एवं उस इलाके की भाविक जनता का विशाल समूह ...

लक्ष्मणपुरा में प्रभातफेरी के दृश्य ...आबालवृद्ध भक्तजनों का भावपूर्ण भक्ति-उल्हास ...

लक्ष्मणपुरा (गुजरात) में गीता-भागवत सत्संग समारोह के लिए पधारते हुए पूज्यश्री का उष्मापूर्ण भावभावित स्वागत करने के लिए ढोल, शहनाइयों एवं सिर पर कलशयुक्त बालिकाओं के साथ उमड़ी हुई भाविक ग्रामजनता ...